[२१] श्री पुष्पिका(उपांग)सूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

"पुष्पिका" मूलं एवं वृत्तिः

[मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः]

[आद्य संपादकः - पूज्य अनुयोगाचार्य श्री दानविजयजी गणि म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.)

15/01/2015, गुरुवार, २०७१ पौष कृष्ण १०

jain_e_library's Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित......आगमसूत्र-[२१], उपांग सूत्र-[१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [–]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित...........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] “पुष्पिका” मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:

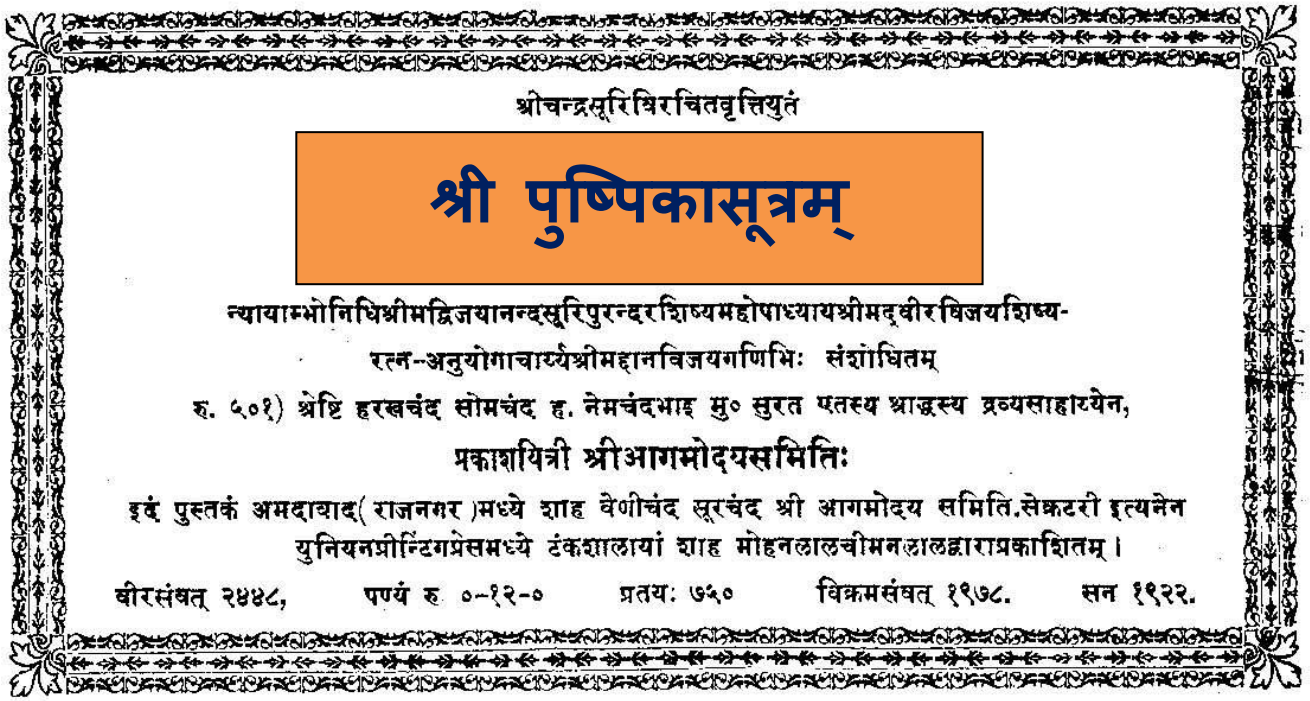

श्रीचन्द्रसूरिविरचितवृत्तियुतं

श्री पुष्पिकासूत्रम्

न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरिपुरन्दरशिष्यमहोपाध्यायश्रीमद्वीरविजयशिष्य-
रत्न--अनुयोगाचार्य्यश्रीमद्दानविजयगणिभिः संशोधितम्

रु. ५०१) श्रेष्टि हरखचंद सोमचंद ह. नेमचंदभाइ मु० सुरत एतस्य श्राद्धस्य द्रव्यसाहाय्येन,

प्रकाशयित्री श्रीआगमोदयसमितिः

इदं पुस्तकं अमदावाद(राजनगर)मध्ये शाह वेणीचंद सूरचंद श्री आगमोदय समिति.सेक्रटरी इत्यनेन
युनियनप्रीन्टिंगप्रेसमध्ये टंकशालायां शाह मोहनलालचीमनलालद्वाराप्रकाशितम्।

वीरसंवत् २४४८, पण्यं रु ०-१२-० प्रतयः ७५० विक्रमसंवत् १९७८. सन १९२२.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुष्पिका-उपाङ्गसूत्रस्य मूल “टाइटल पेज”

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
००१	[१] चन्द्र:	००४		००८	[४]बहुपुत्रिका	०१९		०११	[७-१०] दत्त,शिव आदि	०३४
००४	[२] सूर्य:	००७		००९	[५]पूर्णभद्र:	०३३			---------	---
००७	[३] शुक्र:	००७		०१०	[६]माणिभद्र:	०३३			---------	---

['पुष्पिका' - मूलं एवं वृत्तिः] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "निरयावलिका" के नामसे सन १९२ २ (विक्रम संवत १९७ ८) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्य अनुयोगाचार्य श्री दानविजयजी गणि महाराज साहेब | इसमे 'निरयावलिका,कल्पवतंसिका,पुष्पिका,पुष्पचुलिका,वृष्णिदशा' पांच उपांग थे.

इसी प्रत को फिर से दुसरे पूज्यश्रीओने अपने-अपने नामसे भी छपवाई, जिसमे उन्होंने खुदने तो कुछ नहीं किया, मगर इसी प्रत को ऑफसेट करवा के, अपना एवं अपनी प्रकाशन संस्था का नाम छाप दिया. जिसमे किसीने पूज्यपाद् सागरानंदसूरिजी के नाम को आगे रखा, और अपनी वफादारी दिखाई, तो किसीने स्वयं को ही इस पुरे कार्य का कर्ता बता दिया और संपादकपूज्यश्री तथा प्रकाशक का नाम ही मिटा दिया |

✣ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, **४५-आगम सटीक** भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की *[पूर्वाचार्य]* पूज्य श्री के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर अध्ययन और मूलसूत्र के क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन एवं सूत्र चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ **आगम** का **क्रम** और इसी **प्रत** का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रो के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ **||-||** ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ठ फूटनोट** भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है| **.....मुनि दीपरत्नसागर.....**

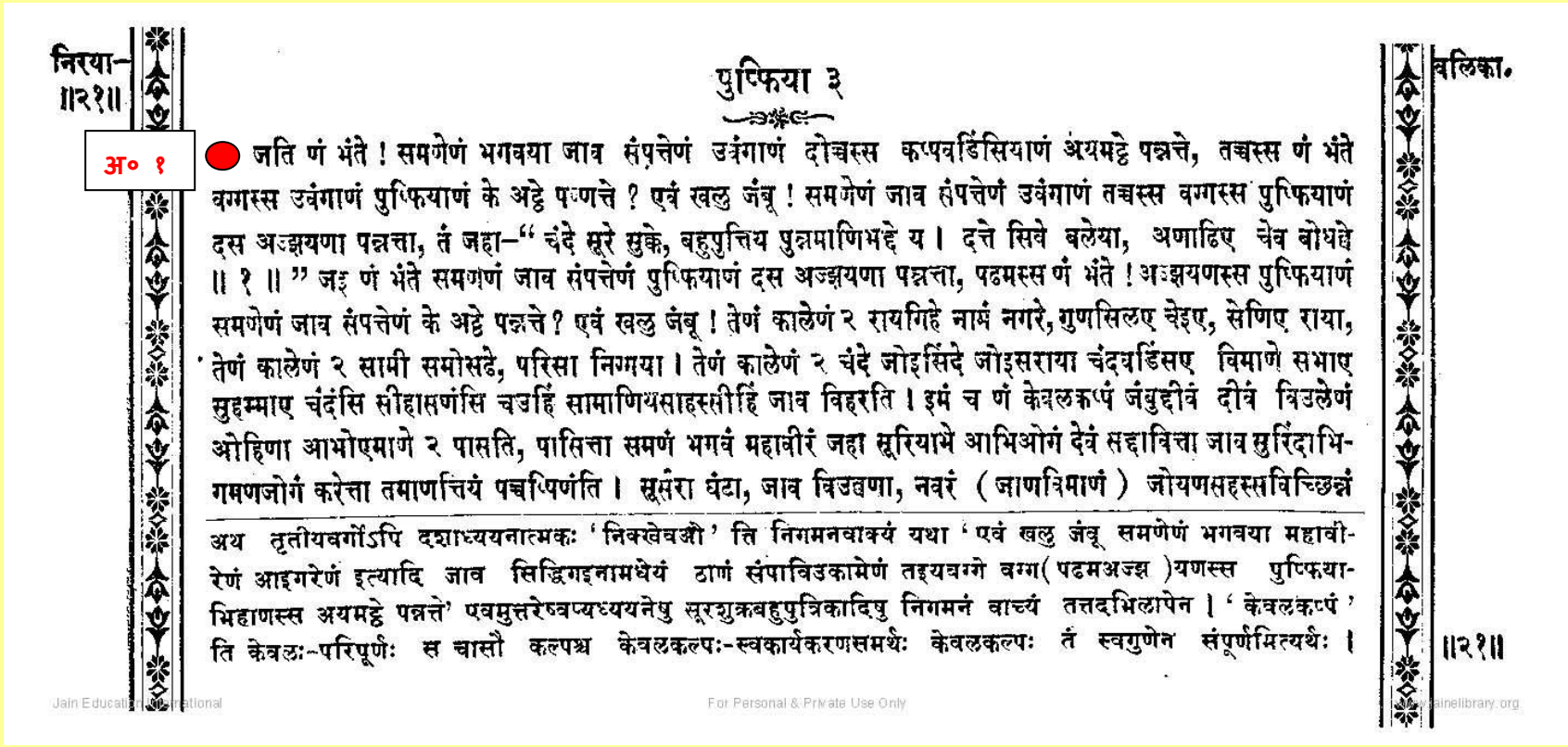

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [१-३]

पुप्फिया ३

अ० १

जति णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं दोच्चस्स कप्पवडिंसियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, तच्चस्स णं भंते वग्गस्स उवंगाणं पुप्फियाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवंगाणं तच्चस्स वग्गस्स पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा–" चंदे सूरे सुक्के, बहुपुत्तिय पुन्नमाणिभद्दे य । दत्ते सिवे बलेया, अणाढिए चेव बोधव्वे ॥ १ ॥ " जइ णं भंते समणेणं जाव संपत्तेणं पुप्फियाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, तेणं कालेणं २ सामी समोसढे, परिसा निग्गया । तेणं कालेणं २ चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव विहरति । इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे २ पासति, पासित्ता समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभे आभिओगं देवं सद्दावित्ता जाव सुरिंदाभिगमणजोगं करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति । सूसरा घंटा, जाव विउव्वणा, नवरं (जाणविमाणं) जोयणसहस्सविच्छिन्नं

अथ तृतीयवर्गोऽपि दशाध्ययनात्मकः 'निक्खेवओ' त्ति निगमनवाक्यं यथा 'एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं इत्यादि जाव सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं तइयवग्गे वग्ग(पढमअज्झ)यणस्स पुप्फियाभिहाणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते' एवमुत्तरेष्वप्यध्ययनेषु सूरशुक्रबहुपुत्रिकादिषु निगमनं वाच्यं तत्तदभिलापेन । 'केवलकप्पं' ति केवलः-परिपूर्णः स चासौ कल्पश्च केवलकल्पः-स्वकार्यकरणसमर्थः केवलकल्पः तं स्वगुणेन संपूर्णमित्यर्थः । ॥२१॥

Jain Education International
For Personal & Private Use Only
www.jainelibrary.org

अध्ययनं-१- 'चन्द्र' आरभ्यते [मूलसूत्र १-३]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [१-३]

अद्धतेवद्विजोयणसमूसियं महिंदज्झतो पणुवीसं जोयणमूसितो सेसं जहा सूरियाभस्स जाव आगतो नट्टविही तहेव पडिगतो। भंते त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं भंते पुच्छा कूडागारसालासरीरं अणुपविट्ठा पुव्वभवो एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ सावत्थी नाम नयरी होत्था, कोट्ठए चेइए, तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अंगती नामं गाहावती होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूते। तते णं से अंगती गाहावती सावत्थीए नयरीए बहूणं नगरनिगम० जहा आणंदो। तेणं कालेणं २ पासे णं अरहा पुरिसादाणीए आदिकरे जहा महावीरो नवुस्सेहे सोलसेहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठतीसा जाव कोट्ठते समोसढे, परिसा निग्गया। तते णं से अंगती गाहावती इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठे जहा कत्तिओ सेट्ठी तहा निग्गच्छति

'कूडागारसालादिट्ठंतो' त्ति कस्मिंश्चिदुत्सवे कस्मिंश्चिन्नगरे बहिर्भागप्रदेशे महती देशिकलोकवसनयोग्या शाला-गृहविशेषः समस्ति। तत्रोत्सवे रममाणस्य लोकस्य मेघवृष्टिर्भवितुमारब्धा, ततस्तद्भयेन त्रस्तबहुजनस्तस्यां शालायां प्रविष्टः, एवमयमपि देवविरचितो लोकः प्रचुरः स्वकार्यं नाट्यकरणं तत्संहृत्यानन्तरं स्वकीयं देवशरीरमेवानुप्रविष्टः इत्ययं शालादृष्टान्तार्थः। 'अड्ढे जाव' त्ति अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ने बहुधणबहुजायरूवे आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डियपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूए इति यावच्छब्दसंगृहीतम्। 'जहा आणंदो' त्ति उपासकदशाङ्गोक्तः श्रावक आनन्दनामा, स च बहूणं ईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियनगरनिगमसेट्ठिसत्थवाहाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य कुडुंबेसु य निच्छिएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सव्वकज्जवट्टावए सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढीभूए होत्था। 'पुरिसादाणीय' त्ति पुरुषैरादीयते पुरुषादानीयः। नवहस्तोच्छ्रयः-नवहस्तोच्चः। अट्ठतीसाए अज्जियासहस्सेहिं संपरिवुडे इति यावत्करणात् दृश्यम्। हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए इत्यादि वाच्यम्।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [१-३]

जाव पज्जुवासति, धम्मं सोच्चा निसम्म जं नवरं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि। तते णं अहं देवाणुप्पियाणं जाव पव्वयामि, जहा गंगदत्तो तहा पव्वतिते जाव गुत्तबंभयारी। तते णं से अंगती अणगारे पासस्स अरहतो तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाई एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणो बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणति २ अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता विराहियसामन्ने कालमासे कालं किच्चा चंदवडिंसए विमाणे उववाते सभाते देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए चंदे जोइसिंदत्ताए उववन्ने। तते णं से चंदे जोइसिंदे जोइसिराया अहुणोवन्ने

देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि। यथा गङ्गदत्तो भगवत्यङ्गोक्तः, स हि किंपाकफलोवमं मुणिय विसयसोक्खं जलबुब्बुयसमाणं कुसग्गबिंदुचंचलं जीवियं च नाऊणमधुवं चइत्ता हिरण्णं विपुलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमाइयं विच्छडइत्ता दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइओ जहा तहा अंगई वि गिहनायगो परिच्चइय सव्वं पव्वइओ जाओ य पंचसमिओ तिगुत्तो अममो अकिंचणो गुत्तिंदिओ गुत्तबंभयारी इत्येवं यावच्छब्दात् दृश्यम्। चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसमासद्धमासखवणेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणइ। 'विराहियसामन्ने' त्ति श्रामण्यं-व्रतं, तद्विराधना चात्र न मूलगुणविषया, किं तूत्तरगुणविषया, उत्तरगुणाश्च पिण्डविशुद्धयादयः, तत्र कदाचित् द्विचत्वारिंशद्दोषविशुद्धाहारस्य ग्रहणं न कृतं कारणं विनाऽपि, बालग्लानादिकारणेऽशुद्धमपि गृह्णन् दोषवानिति, पिण्डस्याशुद्धतादौ विराधितश्रमणता ईर्यादिसमित्यादिशोधनेऽनादरः कृतः, अभिग्रहाश्च गृहीताः कदाचिद्भग्ना भवन्तीति शुण्ठ्यादिसन्निधिपरिभोगमङ्गक्षालनपादक्षालनादि च कृतवानित्यादिप्रकारेण सम्यगपालने व्रतविराधनेति, सा च नालोचिता गुरुसमीपे इत्यनालोचितातिचारो मृत्वा कृतानशनोऽपि ज्योतिष्केन्द्रे चन्द्ररूपतयोत्पन्नः।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [१-३]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ, तं जहा–आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, सासोसासपज्जत्तीए, भासा(मण)पज्जत्तीए। चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो केवइयं कालं ठिती पन्नत्ता ? गोयमा ! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं। एवं खलु गोयमा ! चंदस्स जाव जोतिसरन्नो सा दिवा देविड्ढी। चंदे णं भंते! जोइसिंदे जोइसिराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं चइत्ता कहिं गच्छिहिति २ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति। एवं खलु जंबू समणेणं० निक्खेवओ ॥ १ ॥

अ० २ ● जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव पुप्फियाणं पढमस्स अज्झयणस्स जाव अयमट्ठे पन्नते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवता जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, समोसरणं, जहा चंदो तहा सूरोऽवि आगओ जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगतो। पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी नगरी, सुपतिट्ठे नामं गाहावई होत्था, अड्ढे, जहेव अंगती जाव विहरति, पासो समोसढो, जहा अंगती तहेव पव्वइए, तहेव विराहियसामन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झहिति जाव अंतं०, खलु जंबू ! समणेणं० निक्खेवओ ॥ २ ॥

अ० ३ ● जइ णं भंते ! समणेणं भगवता जाव संपत्तेणं उक्खेवओ भाणियव्वो, रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया,

---

'निक्खेवओ' त्ति निगमनं, तच्च प्रागुपदर्शितम् ॥ तच्चे अज्झयणे शुक्रवक्तव्यताऽभिधीयते—'उक्खेवओ' त्ति उत्क्षेपः–प्रारम्भवाक्यं, यथा–जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स पुप्फियाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, तच्चस्स णं अज्झयणस्स भंते ! पुप्फियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नयरे इत्यादि।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययनं-१- 'चन्द्र' आरभ्यते [मूलसूत्र १-३]

अध्ययनं-२- 'सूर्य' आरब्धं एवं परिसमाप्तं [मूलसूत्र ४]

अध्ययनं-३- 'शक्र' आरभ्यते [मूलसूत्र ५-७]

प्रत
सूत्रांक
[--]

दीप
अनुक्रम
[५-७]

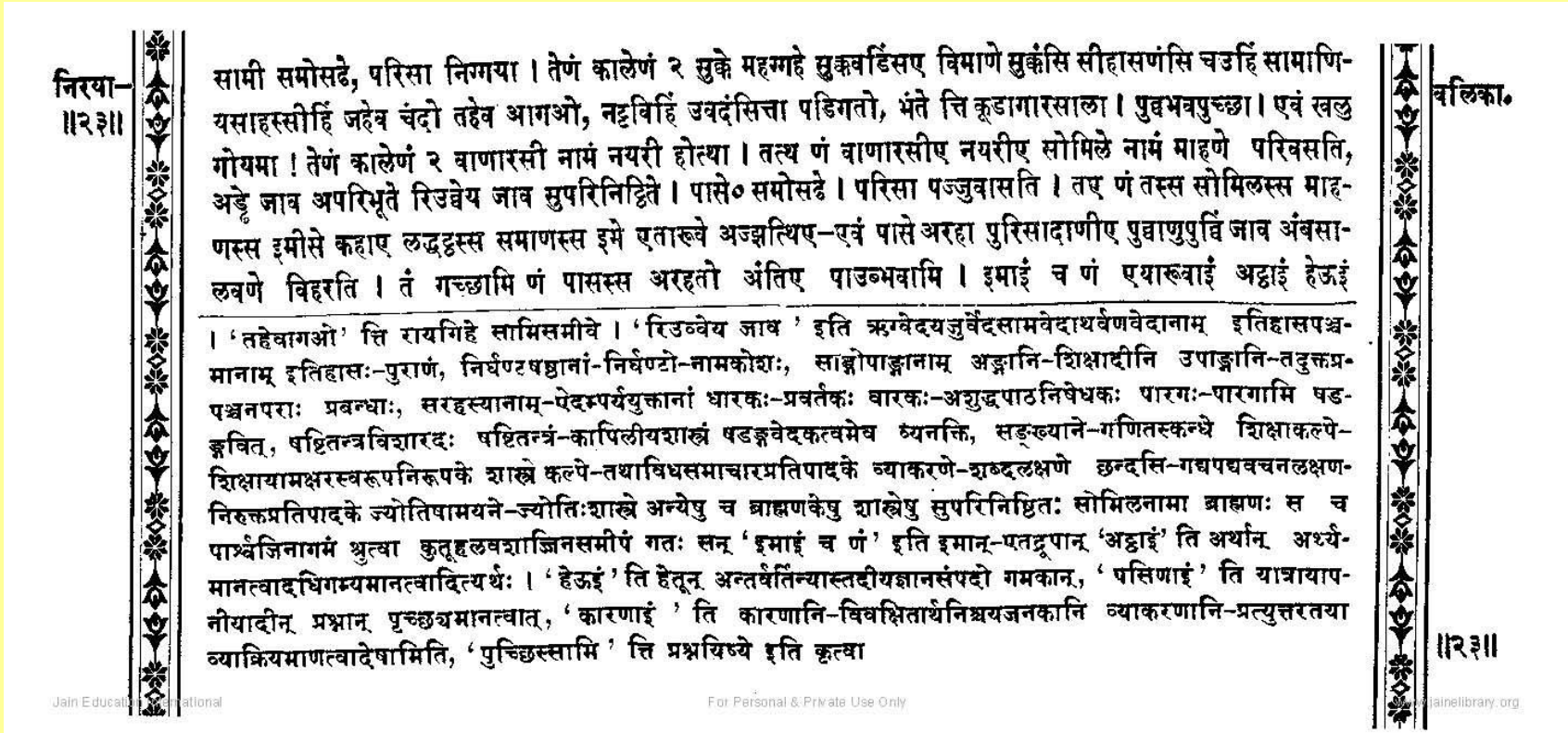

सामी समोसढे, परिसा निग्गया । तेणं कालेणं २ सुक्के महग्गहे सुक्कवडिंसए विमाणे सुक्कंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहेव चंदो तहेव आगओ, नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगतो, भंते त्ति कूडागारसाला । पुव्वभवपुच्छा । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ वाणारसी नामं नयरी होत्था । तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसति, अड्ढे जाव अपरिभूते रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिते । पासे० समोसढे । परिसा पज्जुवासति । तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स इमे एतारूवे अज्झत्थिए–एवं पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं जाव अंबसालवणे विहरति । तं गच्छामि णं पासस्स अरहतो अंतिए पाउब्भवामि । इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं

। 'तहेवागओ' त्ति रायगिहे सामिसमीवे । 'रिउव्वेय जाव' इति ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदाथर्वणवेदानाम् इतिहासपञ्चमानाम् इतिहासः–पुराणं, निर्घण्टषष्ठानां–निर्घण्टो–नामकोशः, साङ्गोपाङ्गानाम् अङ्गानि–शिक्षादीनि उपाङ्गानि–तदुक्तप्रपञ्चनपराः प्रबन्धाः, सरहस्यानाम्–ऐदम्पर्ययुक्तानां धारकः–प्रवर्तकः वारकः–अशुद्धपाठनिषेधकः पारगः–पारगामि षडङ्गवित्, षष्टितन्त्रविशारदः षष्टितन्त्रं–कापिलीयशास्त्रं षडङ्गवेदकत्वमेव व्यनक्ति, सङ्ख्याने–गणितस्कन्धे शिक्षाकल्पे–शिक्षायामक्षरस्वरूपनिरूपके शास्त्रे कल्पे–तथाविधसमाचारप्रतिपादके व्याकरणे–शब्दलक्षणे छन्दसि–गद्यपद्यवचनलक्षणनिरुक्तप्रतिपादके ज्योतिषामयने–ज्योतिःशास्त्रे अन्येषु च ब्राह्मणकेषु शास्त्रेषु सुपरिनिष्ठितः सोमिलनामा ब्राह्मणः स च पार्श्वजिनागमं श्रुत्वा कुतूहलवशाज्जिनसमीपं गतः सन् 'इमाइं च णं' इति इमान्–एतद्रूपान् 'अट्ठाइं' ति अर्थान् अर्थ्यमानत्वादधिगम्यमानत्वादित्यर्थः । 'हेऊइं' ति हेतून् अन्तर्वर्तिन्यास्तदीयज्ञानसंपदो गमकान्, 'पसिणाइं' ति यात्रायापनीयादीन् प्रश्नान् पृच्छ्यमानत्वात्, 'कारणाइं' ति कारणानि–विवक्षितार्थनिश्चयजनकानि व्याकरणानि–प्रत्युत्तरतया व्याक्रियमाणत्वादेषामिति, 'पुच्छिस्सामि' त्ति प्रश्नयिष्ये इति कृत्वा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [५-७]

जहा पण्णत्तीए। सोमिलो निग्गतो खंडियविहुणो जाव एवं वयासि–जत्ता ते भंते! जवणिज्जं चं ते! पुच्छा सरिसवया मासा कुलत्था एगे भवं जाव संबुद्धे सावगधम्मं पडिवज्जित्ता पडिगते। तते णं पासे णं अरहा अण्णया कदायि वाणार-

निर्गतः। 'खंडियविहुणो' त्ति छात्ररहितः, गत्वा च भगवत्समीप एवमवादीत्–'जत्ता ते भंते! जवणिज्जं च ते!' इति प्रश्नः, तथा सरिसवया मासा कुलत्था एते भोजएण एगे भवं दुवे भवं इति च एतेषां च यात्रादिपदानामागमिकगम्भीरार्थत्वेन भगवति तदर्थपरिज्ञानमसंभावयताऽपभ्राजनार्थं प्रश्नः कृत इति 'सरिसवय' त्ति एकत्र सदृशवयसः अन्यत्र सर्षपाः–सिद्धार्थकाः, 'मास' त्ति एकत्र माषो–दशार्धगुञ्जामानः सुवर्णादिविषयः अन्यत्र माषो-धान्यविशेषः उडद इति लोके रूढः, 'कुलत्थ' त्ति एकत्र कुले तिष्ठन्ति इति कुलस्थाः, अन्यत्र कुलस्था–धान्यविशेषः। सरिसवयादिपदप्रश्नश्च च्छलग्रहणेनोपहासार्थं कृतः इति, 'एगे भवं' ति एको भवान् इत्येकत्वाभ्युपगमे आत्मनः कृते भगवता श्रोत्रादिविज्ञानानामवयवानां चात्मनोऽनेकश उपलब्ध्या एकत्वं दूषयिष्यामीति बुद्ध्या पर्यनुयोगो द्विजेन कृतः यावच्छब्दात् 'दुवे भवं' ति गृह्यते द्वौ भवान् इति च द्वित्वाभ्युपगमेऽहमेकत्वविशिष्टस्यार्थस्य द्वित्वविरोधेन द्वित्वं दूषयिष्यामीति बुद्ध्या पर्यनुयोगो विहितः। अत्र भगवान् स्याद्वादपक्षं निखिलदोषगोचरातिक्रान्तमवलम्ब्योत्तरमदायि (मदित)–एकोऽप्यहं, कथं? द्रव्यार्थतया जीवद्रव्यस्यैकत्वात् न तु प्रदेशार्थतया (प्र देशार्थतया) ह्यनेकत्वात्, ममेत्यवादीनामेकत्वोपलंभो न बाधकः, ज्ञानदर्शनार्थतया कदाचित् द्वित्वमपि न विरुद्धमित्यत उक्तं द्वावप्यहं, किं चैकस्यापि स्वभावभेदेनानेकधात्वं दृश्यते, तथाहि-एको हि देवदत्तादि पुरुष एकदैव तत्तदपेक्षया पितृत्वपुत्रत्वभ्रातृव्यत्वमातुलत्वभागिनेयत्वादीननेकान् स्वभावान् लभते। 'तहा अक्खए अव्वए निच्चे अवट्ठिए आय' त्ति यथा जीवद्रव्यस्यैकत्वादेकस्तथा प्रदेशार्थतयाऽसङ्ख्येयप्रदेशतामाश्रित्याक्षयः, सर्वथा प्रदेशानां क्षयाभावात्, तथाऽव्ययः कियतामपि व्ययत्वाभावात्, असङ्ख्येयप्रदेशता हि न कदाचनाप्यपैति, अतो व्यवस्थितत्वान्नित्यताऽभ्युपगमेऽपि न कश्चिद्दोषः, इत्येवं भगवताऽभिहिते तेनापृष्टेऽप्यात्मस्वरूपे तद्बोधार्थं, व्यवच्छिन्नसंशयःसंजातसम्यक्त्वः 'दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जित्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

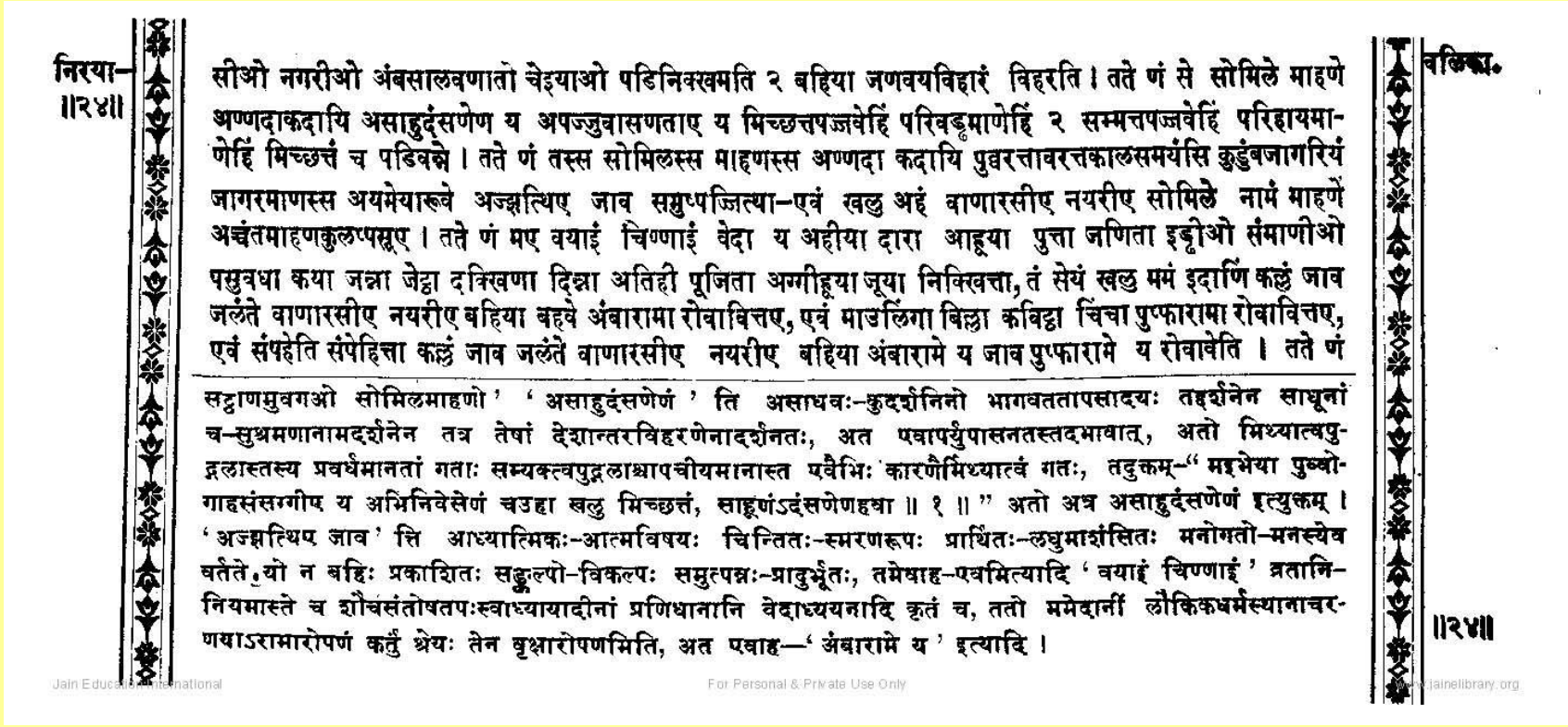

निरया- ॥२४॥

सीओ नगरीओ अंबसालवणातो चेइयाओ पडिनिक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरति। तते णं से सोमिले माहणे अण्णदाकदायि असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणताए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं मिच्छत्तं च पडिवन्ने। तते णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अण्णदा कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूए। तते णं मए वयाइं चिण्णाइं वेदा य अहीया दारा आहूया पुत्ता जणिता इट्ठीओ संमाणीओ पसुवधा कया जन्ना जेट्ठा दक्खिणा दिन्ना अतिही पूजिता अग्गीहूया जूया निक्खित्ता, तं सेयं खलु ममं इदाणिं कल्लं जाव जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अंबारामा रोवावित्तए, एवं माउलिंगा बिल्ला कविट्ठा चिंचा पुप्फारामा रोवावित्तए, एवं संपेहेति संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया अंबारामे य जाव पुप्फारामे य रोवावेति। तते णं

सट्ठाणमुवगओ सोमिलमाहणो' 'असाहुदंसणेणं' ति असाधवः–कुदर्शनिनो भागवततापसादयः तद्दर्शनेन साधूनां च–सुश्रमणानामदर्शनेन तत्र तेषां देशान्तरविहरणेनादर्शनतः, अत एवापर्युपासनतस्तदभावात्, अतो मिथ्यात्वपुद्गलास्तस्य प्रवर्धमानतां गताः सम्यक्त्वपुद्गलाश्चापचीयमानास्त एवैभिः कारणैर्मिथ्यात्वं गतः, तदुक्तम्–"मइभेया पुव्वोगाहसंसग्गीए य अभिनिवेसेणं चउहा खलु मिच्छत्तं, साहूणंऽदंसणेणहवा ॥ १ ॥" अतो अत्र असाहुदंसणेणं इत्युक्तम्। 'अज्झत्थिए जाव' त्ति आध्यात्मिकः–आत्मविषयः चिन्तितः–स्मरणरूपः प्रार्थितः–लघुमाशंसितः मनोगतो–मनस्येव वर्तते, यो न बहिः प्रकाशितः सङ्कल्पो–विकल्पः समुत्पन्नः–प्रादुर्भूतः, तमेवाह–एवमित्यादि 'वयाइं चिण्णाइं' व्रतानि–नियमास्ते च शौचसंतोषतपःस्वाध्यायादीनां प्रणिधानानि वेदाध्ययनादि कृतं च, ततो ममेदानीं लौकिकधर्मस्थानाचरणयाऽऽरामारोपणं कर्तुं श्रेयः तेन वृक्षारोपणमिति, अत एवाह—'अंबारामे य' इत्यादि।

वलिका. ॥२४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [५-७]

बहवे अंबारामा य जाव पुप्फारामा य अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा आरामा जाता किण्हा किण्हाभासा जाव रम्मा महामेहनिकुरंबभूता पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणसिरिया अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति । तते णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अण्णदा कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं वाणारसीए णयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहणकुलप्पसूते, तते णं मए वयाइं चिण्णाइं जाव जूवा णिक्खित्ता, तते णं मए वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अंबारामा जाव पुप्फारामा य रोवाविया, तं सेयं खलु ममं इदाणिं कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं घडावित्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तनाइ० आमंतित्ता तं मित्तनाइणियग० विउलेणं असण जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्त जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता तं मित्तनाइ जाव आपुच्छित्ता सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियतावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा–होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जंनती सड्ढती घालती हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जलंते सूरिए इत्यादि वाच्यम् । "मित्तनाइनियगसंबंधिपरियणं पि य आमंतित्ता विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं भोयावित्ता सम्माणित्ता" इति अत्र मित्राणि–सुहृदः ज्ञातयः–समानजातयः निजकाः–पितृव्यादयः संबन्धिनः–श्वशुरपुत्रादयः परिजनो–दासीदासादिः तमामंत्र्य विपुलेन भोजनादिना भोजयित्वा सत्कारयित्वा वस्त्रादिभिः संमानयित्वा गुणोत्कीर्तनतः ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वाऽधिपतित्वेन गृहीतलोहकटाहाद्युपकरणः । 'वाणपत्थ' त्ति वने भवा वानी प्रस्थानं प्रस्था–अवस्थितिः वानी प्रस्था येषां ते वानप्रस्थाः अथवा 'ब्रह्मचारी गृहस्थश्च, वानप्रस्थो यतिस्तथा।' इति चत्वारो लोकप्रतीता आश्रमाः, एतेषां च तृतीयाश्रमवर्तिनो वानप्रस्थाः, 'होत्तिय' त्ति अग्निहोतृकाः, 'पोत्तिय' त्ति वस्त्रधारिणः, कोत्तिया जन्नई सड्ढई घालई हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

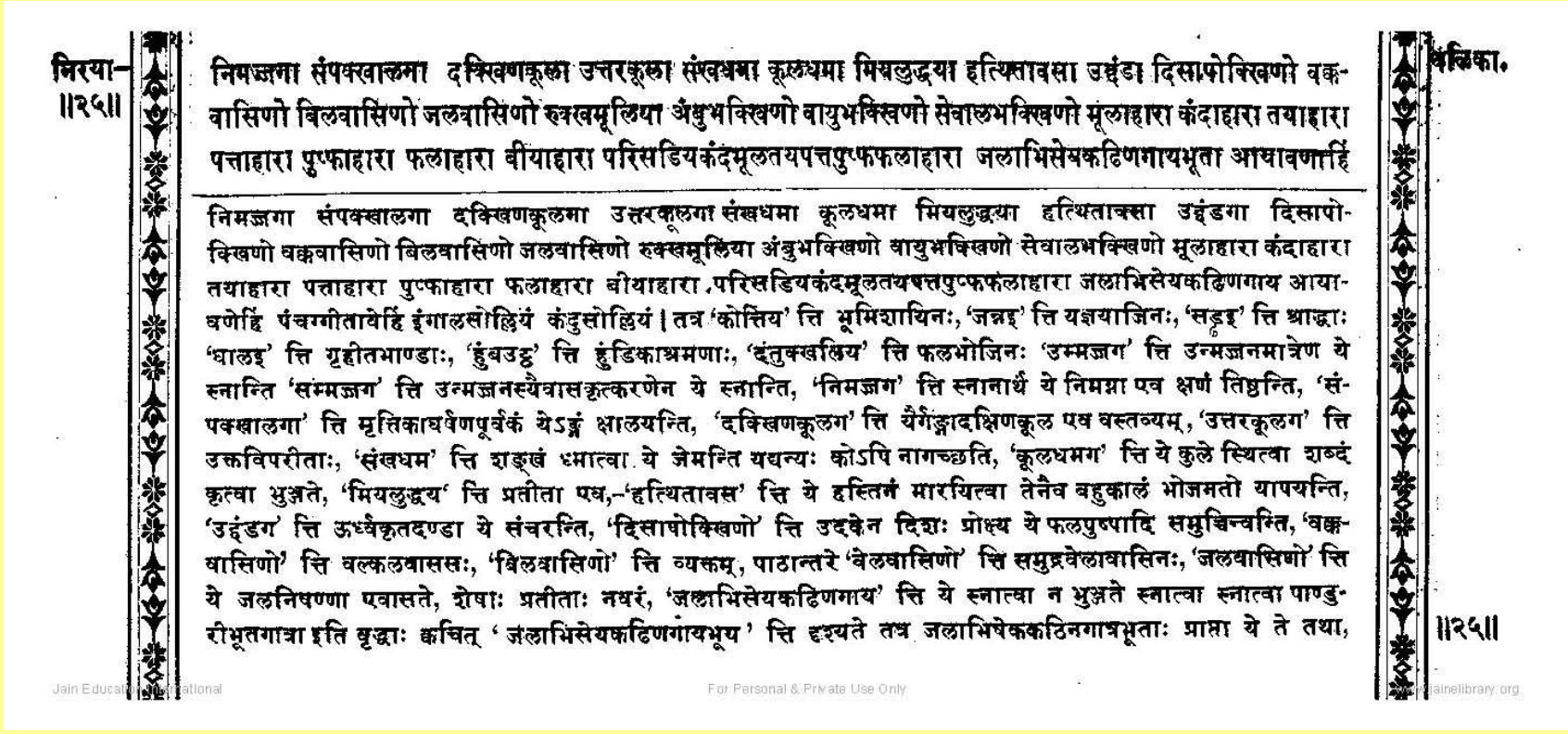

प्रत
सूत्रांक
[–]

दीप
अनुक्रम
[५-७]

निमज्जगा संपक्खालगा दक्खिणकूला उत्तरकूला संखधमा कूलधमा मियलुद्धया हत्थितावसा उद्दंडा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वायुभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकंदमूलतयपत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकढिणगायभूता आयावणाहिं

निमज्जगा संपक्खालगा दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमा कूलधमा मियलुद्धया हत्थितावसा उद्दंडगा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वायुभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा .परिसडियकंदमूलतयपत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकढिणगाय आयावणेहिं पंचग्गीतावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं। तत्र 'कोत्तिय' त्ति भूमिशायिनः, 'जन्नइ' त्ति यज्ञयाजिनः, 'सड्ढइ' त्ति श्राद्धाः 'थालइ' त्ति गृहीतभाण्डाः, 'हुंबउट्ठ' त्ति हुंडिकाश्रमणाः, 'दंतुक्खलिय' त्ति फलभोजिनः 'उम्मज्जग' त्ति उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति 'सम्मज्जग' त्ति उन्मज्जनस्यैवासकृत्करणेन ये स्नान्ति, 'निमज्जग' त्ति स्नानार्थं ये निमग्ना एव क्षणं तिष्ठन्ति, 'संपक्खालगा' त्ति मृत्तिकाघर्षणपूर्वकं येऽङ्गं क्षालयन्ति, 'दक्खिणकूलग' त्ति यैर्गङ्गादक्षिणकूल एव वस्तव्यम्, 'उत्तरकूलग' त्ति उक्तविपरीताः, 'संखधम' त्ति शङ्खं ध्मात्वा ये जेमन्ति यद्यन्यः कोऽपि नागच्छति, 'कूलधमग' त्ति ये कुले स्थित्वा शब्दं कृत्वा भुञ्जते, 'मियलुद्धय' त्ति प्रतीता एव,–'हत्थितावस' त्ति ये हस्तिनं मारयित्वा तेनैव बहुकालं भोजमतो यापयन्ति, 'उद्दंडग' त्ति ऊर्ध्वकृतदण्डा ये संचरन्ति, 'दिसापोक्खिणो' त्ति उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समुच्चिन्वन्ति, 'वक्कवासिणो' त्ति वल्कलवाससः, 'बिलवासिणो' त्ति व्यक्तम्, पाठान्तरे 'वेलवासिणो' त्ति समुद्रवेलावासिनः, 'जलवासिणो' त्ति ये जलनिषण्णा एवासते, शेषाः प्रतीताः नवरं, 'जलाभिसेयकढिणगाय' त्ति ये स्नात्वा न भुञ्जते स्नात्वा स्नात्वा पाण्डुरीभूतगात्रा इति वृद्धाः क्वचित् 'जलाभिसेयकढिणगायभूय' त्ति दृश्यते तत्र जलाभिषेककठिनगात्रभूताः प्राप्ता ये ते तथा, ॥२५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [५-७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

पंचग्गीतावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति। तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसिं अंतिए दिसापोक्खियत्ताए पव्वइत्तए पव्वयिते वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिन्हिस्सामि—कप्पति मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठे णं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहातो पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आतावण-भूमीए आतावेमाणस्स विहरत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ २ कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोह जाव दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए २ वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं जाव अभिगिन्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरति। तते णं सोमिले माहणे रिसी पढमछट्ठक्खमणपारणंसि आयावणभूमीए पच्चोरुहति २ वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवा० २ किढिणसंकाइयं गेण्हति २ पुरच्छिमं दिसिं पुक्खेति, पुरच्छिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं अभि० २ जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य-

'इंगालसोल्लियं' ति अङ्गारैरिव पक्वम्, 'कंदुसोल्लियं' ति कन्दुपक्वमिवेति। 'दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेणं' ति एकत्र पारणके पूर्वस्यां दिशि यानि फलादीनि तान्याहृत्य भुङ्क्ते, द्वितीये तु दक्षिणस्यामित्येवं दिक्चक्रवालेन तत्र तपःकर्मणि पारणककरणं तत्तपःकर्म दिक्चक्रवालमुच्यतेतेन तपःकर्मणेति। 'वागलवत्थनियत्थे' त्ति वल्कलं-वल्कः तस्येदं वाल्कलं तद्वस्त्रं निवसितं येन स वाल्कलवस्त्रनिवसितः। 'उडए' त्ति उटजः-तापसाश्रमगृहम्। 'किढिण' त्ति वंशमयस्तापसभाजनविशेषः ततश्च तयोः सांकायिकं-भारोद्वहनयन्त्रं किढिणसांकायिकम्। 'महाराय' त्ति लोकपालः। 'पत्थाणे पत्थियं' ति प्रस्थाने परलोकसाधनमार्गे प्रस्थितं-प्रवृत्तं फलाद्याहरणार्थं, गमने वा प्रवृत्तम्। सोमिलद्विजऋषिम्।

१ कढिण प्र०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

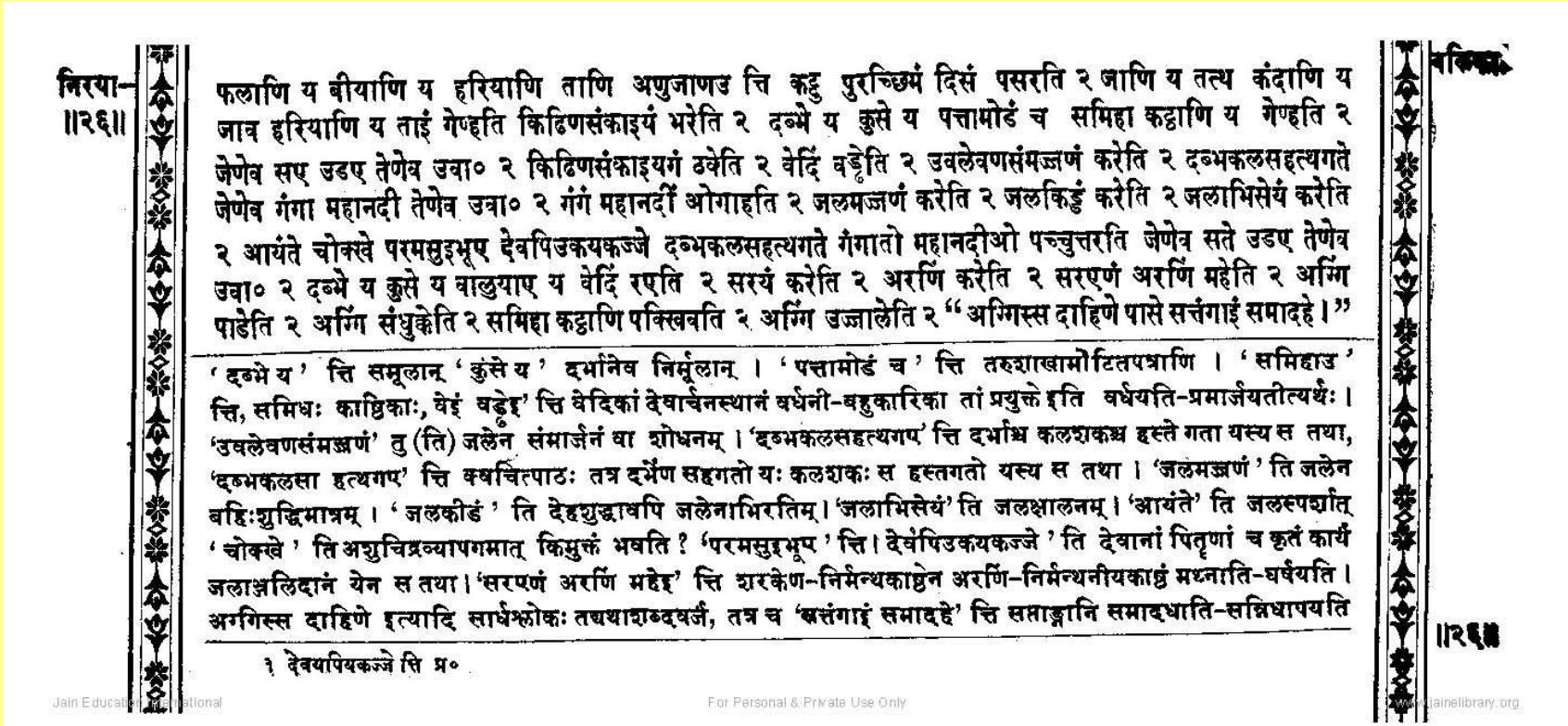

निरया- ॥२६॥

फलाणि य बीयाणि य हरियाणि ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरच्छिमं दिसं पसरति २ जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हति किढिणसंकाइयं भरेति २ दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च समिहा कट्ठाणि य गेण्हति २ जेणेव सए उडए तेणेव उवा० २ किढिणसंकाइयगं ठवेति २ वेदिं वड्ढेति २ उवलेवणसंमज्जणं करेति २ दब्भकलसहत्थगते जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवा० २ गंगं महानदीं ओगाहति २ जलमज्जणं करेति २ जलकिड्डं करेति २ जलाभिसेयं करेति २ आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवपिउकयकज्जे दब्भकलसहत्थगते गंगातो महानदीओ पच्चुत्तरति जेणेव सते उडए तेणेव उवा० २ दब्भे य कुसे य वालुयाए य वेदिं रएति २ सरयं करेति २ अरणिं करेति २ सरएणं अरणिं महेति २ अग्गिं पाडेति २ अग्गिं संधुक्केति २ समिहा कट्ठाणि पक्खिवति २ अग्गिं उज्जालेति २ "अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तंगाइं समादहे।"

'दब्भे य' त्ति समूलान् 'कुसे य' दर्भानेव निर्मूलान्। 'पत्तामोडं च' त्ति तरुशाखामोटितपत्राणि। 'समिहाउ' त्ति, समिधः काष्ठिकाः, वेइं वड्ढेइ' त्ति वेदिकां देवार्चनस्थानं वर्धनी-बहुकारिका तां प्रयुक्ते इति वर्धयति-प्रमार्जयतीत्यर्थः। 'उवलेवणसंमज्जणं' तु (ति) जलेन संमार्जनं वा शोधनम्। 'दब्भकलसहत्थगए' त्ति दर्भाश्च कलशकश्च हस्ते गता यस्य स तथा, 'दब्भकलसा हत्थगए' त्ति क्वचित्पाठः तत्र दर्भेण सहगतो यः कलशकः स हस्तगतो यस्य स तथा। 'जलमज्जणं' ति जलेन बहिःशुद्धिमात्रम्। 'जलकीडं' ति देहशुद्धावपि जलेनाभिरतिम्। 'जलाभिसेयं' ति जलक्षालनम्। 'आयंते' ति जलस्पर्शात् 'चोक्खे' ति अशुचिद्रव्यापगमात् किमुक्तं भवति? 'परमसुइभूए' त्ति। देवपिउकयकज्जे' ति देवानां पितॄणां च कृतं कार्यं जलाञ्जलिदानं येन स तथा। 'सरएणं अरणिं महेइ' त्ति शरकेण-निर्मन्थकाष्ठेन अरणिं-निर्मन्थनीयकाष्ठं मथ्नाति-घर्षयति। अग्गिस्स दाहिणे इत्यादि सार्धश्लोकः तथाशब्दवर्जं, तत्र च 'सत्तंगाइं समादहे' त्ति सप्ताङ्गानि समादधाति-सन्निधापयति

१ देवयपियकज्जे त्ति प्र०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [५-७]

तं जहा–"सकथं वक्कलं ठाणं सिज्झं भंडं कमंडलुं। दंडदारुं तहप्पाणं अह ताइं समादहे ॥" मधुणाय घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, चरुं साधेति २ बलिं वइस्सदेवं करेति २ अतिहिपूयं करेति २ तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेति। तते णं सोमिले माहणरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणपारणगंसि तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव आहारं आहारेति, नवरं इमं नाणत्तं–दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं माहणरिसिं जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव अणुजाणउ त्ति कट्टु दाहिणं दिसिं पसरति। एवं पच्चत्थिमे णं वरुणे महाराया जाव पच्चत्थिमं दिसिं पसरति। उत्तरे णं वेसमणे महाराया जाव उत्तरं दिसिं पसरति। पुव्वदिसागमेणं चत्तारि वि दिसाओ भाणियव्वाओ जाव आहारं आहारेति। तते णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अण्णया कयायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्च जागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं वाणारसीए नगरीए सोमिले नामं माहणरिसी अच्चंतमाहणकुलप्पसूए, तते णं मए वयाइं चिण्णाइं जाव जूवा निक्खित्ता। तते णं मम वाणारसीए जाव पुप्फारामा य जाव रोविता। तते णं मए सुबहुलोह जाव घडावित्ता जाव जेट्ठपुत्तं ठावित्ता जाव जेट्ठपुत्तं आपुच्छित्ता सुबहुलोह जाव गहाय मुंडे जाव पव्वइए वि य णं समाणे छट्ठंछट्ठेणं

सकथं १ वल्कलं २ स्थानं ३ शय्याभाण्डं ४ कमण्डलुं ५ दण्डदारुं ६ तथात्मानमिति ७। तत्र सकथं–तत्समयप्रसिद्ध उपकरणविशेषः, स्थानं–ज्योतिःस्थानम् पात्रस्थानं वा, शय्याभाण्डं–शय्योपकरणं, कमण्डलुः–कुण्डिका, दण्डदारु–दण्डकः, आत्मा प्रतीतः। 'चरुं साहेति' त्ति चरुः–भाजनविशेषः तत्र पच्यमानं द्रव्यमपि चरुरेव तं चरुं बलिमित्यर्थः साधयति–रन्धयति। 'बलिं वइस्सदेवं करेइ' त्ति बलिना वैश्वानरं पूजयतीत्यर्थः। 'अतिहिपूयं करेइ' त्ति अतिथेः–आगन्तुकस्य पूजां करोतीति 'जाव गहा' कढुच्छुयतंबियभायणं गहाय दिसापोक्खियतावसत्तए पव्वइए प्रव्रजितेऽपि[२] षष्ठाद्यितपःकरणेन दिशः प्रे-

१ वेयं प्र० २ प्रव्रजितस्वेऽपि प्र०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाव विहरति । तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं पादु० जाव जलंते बहवे तावसे दिट्ठा भट्ठे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए अ आपुच्छित्ता आसमसंसियाणि य बहूइं सत्तसयाइं अणुमाणइत्ता वागलवत्थनियत्थस्स कढिणसंकाइयगहितसभंडोवकरणस्स कट्ठमुद्दाए मुहं बंधित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाणं पत्थावेइत्तए एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते बहवे तावसे य दिट्ठा भट्ठे य पुव्वसंगतिते य तं चेव जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति, बंधित्ता अयमेतारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति जत्थेव णं अम्हं जलंसि वा एवं थलंसि वा दुग्गंसि वा निन्नंसि वा पव्वतंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा पक्खलिज्ज वा पवडिज्ज वा नो खलु मे कप्पति पच्चुट्ठित्तए त्ति कट्टु अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति, उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुह पत्थाणं (महपत्थाणं) पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागते, असोगवरपायवस्स अहे कढिणसंकाइयं ठवेति २ वेदिं वड्ढेइ २ उवलेवणसंमज्जणं करेति २ दब्भकलसहत्थगते जेणेव गंगा महानई जहा सिवो जाव गंगातो महानईओ पच्चुत्तरइ, जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवा० २ दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए वेदि रतेति, रतित्ता सरगं करेति २

क्षितत्वादिविधिं च कृत्वा पारणादिकमाचरितवान् । इदानीं च इदं मम श्रेयः कर्तुं, तदेवाह-'जाव जलंते' सूरिए दृष्टान् आभाषितान् आपृच्छ्य, बहूनि सत्त्वशतानि समनुमान्य संभाष्य, गृहीतनिजभाण्डोपकरणस्योत्तरदिगभिमुखं गन्तुं मम युज्यते इति संप्रेक्ष्यते चेतसि । 'कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइत्ता' यथा काष्ठं काष्ठमयः पुत्तलको न भाषते एवं सोऽपि मौनावलम्बी जातः यद्वा मुखरन्ध्राच्छादकं काष्ठखण्डमुभयपार्श्वच्छिद्रद्वयप्रेषितदवरकान्वितं मुखबन्धनं काष्ठमुद्रा तया मुखं बध्नाति। जलस्थलादीनि सुगमानि, एतेषु स्थानेषु स्खलितस्य प्रतिपतितस्य वा न तत उत्थातुं मम कल्पते। महाप्रस्थानं पदं ति मरणकालभावि कर्तुं ततः प्रस्थितः-कर्तुमारब्धः । 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' त्ति पाश्चात्यापराण्हकालसमयः-दिनस्य चतुर्थप्रहरलक्षणः ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [५-७]

जाव बलिं वइस्सदेवं करेति २ कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति तुसिणीए संचिट्ठति । तते णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूते । तते णं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासि–हं भो सोमिलमाहणा ! पव्वइया दुपव्वइतं ते । तते णं से सोमिले तस्स देवस्स दोच्चं पि तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाति नो परिजाणइ जाव तुसिणीए संचिट्ठति । तते णं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव जाव पडिगते । तते णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे कढिणसंकाइयं गहियग्गिहोत्तभंडोवकरणे कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति २ उत्तराभिमुहे संपत्थिते । तते णं से सोमिले बितियदिवसम्मि पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव सत्तिवन्ने अहे कढिणसंकाइयं ठवेति २ वेतिं वड्ढेति २ जहा असोगवरपायवे जाव अग्गिं हुणति, कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति, तुसिणीए संचिट्ठति । तते णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए । तते णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने जहा असोगवरपायवे जाव पडिगते । तते णं से सोमिले कल्लं जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे कढिणसंकाइयं गेण्हति २ कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति २ उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिते । तते णं से सोमिले ततियदिवसम्मि पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवा० २ असोगवरपायवस्स अहे कढिणसंकाइयं ठवेति, वेतिं वड्ढेति जाव गंगं महानइं पच्चुत्तरति २ जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवा० २ वेतिं रएति २ कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति २ तुसिणीए संचिट्ठति । तते णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउ० तं चेव भणति जाव पडिगते । तते णं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे

'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' त्ति पूर्वरात्रो–रात्रेः पूर्वभागः, अपररात्रो–रात्रेः पश्चिमभागः तल्लक्षणो यः कालसमयः–कालरूपसमयः स तथा तत्र रात्रिमध्यान्हे (मध्यरात्रे) इत्यर्थः । अन्तिकं–समीपं, प्रादुर्भूतः । इत ऊर्ध्वं सर्वं निगदसिद्धं जाव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] “पुष्पिका” मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:

प्रत
सूत्रांक
[–]

दीप
अनुक्रम
[५-७]

निरया- ॥२८॥ कढिणसंकाइयं जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति २ उत्तराए दिसाए उत्तराए संपत्थिए। तते णं से सोमिले चउत्थदिवसपुव्वाव- वलिका॰
रण्हकालसमयंसि जेणेव वडपायवे तेणेव उवागते वडपायवस्स अहे किढिणं संठवेति २ वेइं वड्ढेति उवलेवणसंमज्जणं करेति
जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति, तुसिणीए संचिट्ठति। तते णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउ॰ तं
चेव भणति जाव पडिगते। तते णं से सोमिले जाव जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिणसंकायियं जाव कट्ठमुद्दाए मुहं
बंधति, उत्तराए उत्तराभिमुहे संपत्थिते। तते णं से सोमिले पंचमदिवसम्मि पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव उंबरपायवे उंबर-
पायवस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवेति, वेइं वड्ढेति जाव कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति जाव तुसिणीए संचिट्ठति। तते णं तस्स
सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे जाव एवं वयासि–हं भो सोमिला! पव्वइया दुप्पव्वइयं ते पढमं भणति तहेव
तुसिणीए संचिट्ठति, देवो दोच्चं पि तच्चं पि वदति सोमिला! पव्वइया दुप्पव्वइयं ते। तए णं से सोमिले तेणं देवेणं दोच्चं
पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे तं देवं एवं वयासि–कहण्णं देवाणुप्पिया! मम दुप्पव्वइतं?। तते णं से देवे सोमिलं माहणं एवं
वयासि–एवं खलु देवाणुप्पिया! तुमं पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स अंतियं पंचाणुव्वए सत्त सिक्खावए दुवालसविहे
सावगधम्मे पडिवन्ने, तए णं तव अण्णदा कदाइ पुव्वरत्त॰ कुडुंब॰ जाव पुव्वचिंतितं देवो उच्चारेति जाव जेणेव असोगवरपा-
यवे तेणेव उवा॰ २ कढिणसंकाइयं जाव तुसिणीए संचिट्ठसि। तते णं पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अंतियं पाउब्भवामि हं भो
सोमिला! पव्वइया दुप्पव्वतियं ते तह चेव देवो नियवयणं भणति जाव पंचमदिवसम्मि पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव
उंबरवरपायवे तेणेव उवागते किढिणसंकाइयं ठवेहि वेदिं वड्ढति उवलेवणं संमज्जणं करेति २ कट्ठमुद्दाए मुहं बंधति, बंधित्ता ॥२८॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [--]

दीप अनुक्रम [५-७]

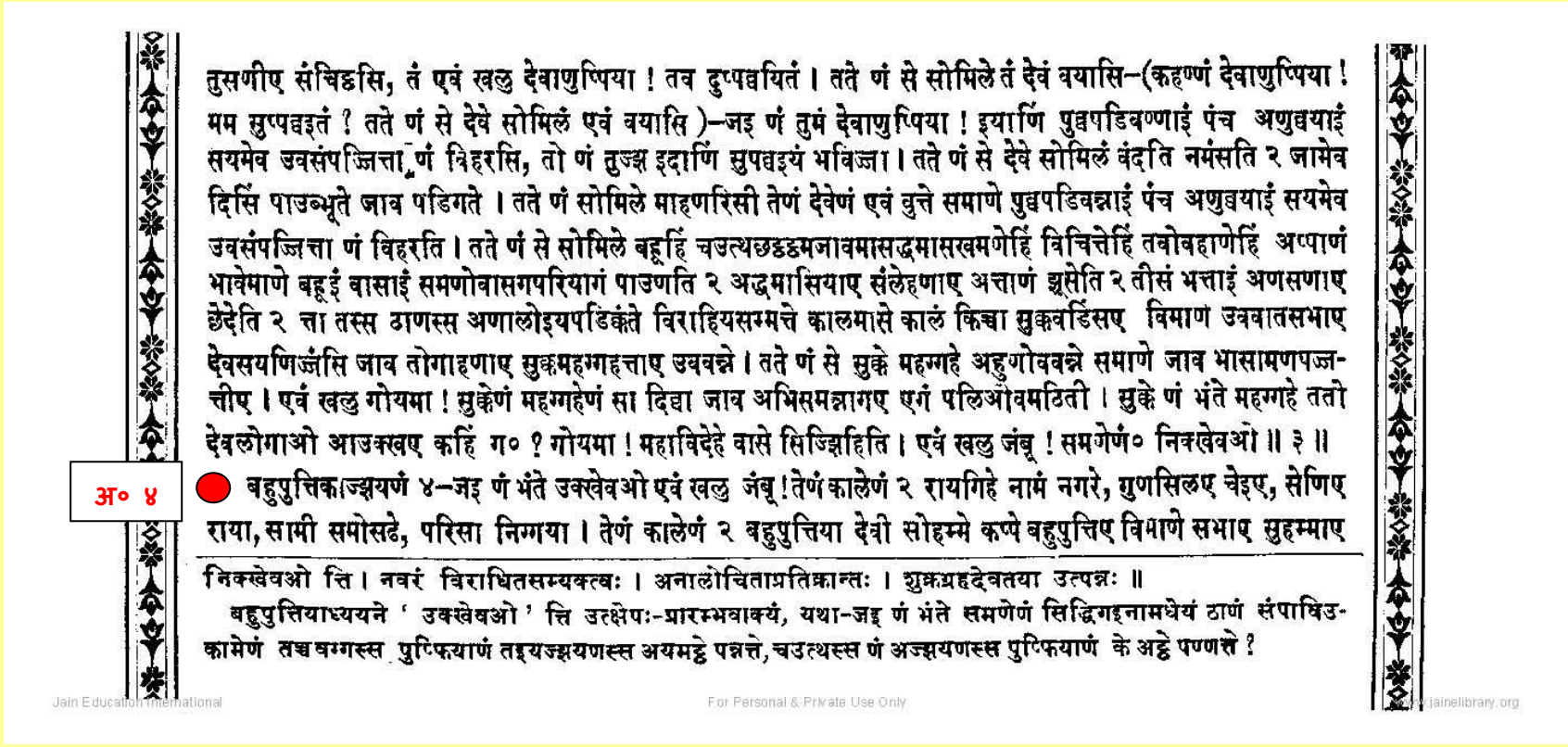

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

तुसणीए संचिट्ठसि, तं एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव दुप्पव्वयितं । तते णं से सोमिले तं देवं वयासि-(कहण्णं देवाणुप्पिया ! मम सुप्पव्वइतं ? तते णं से देवे सोमिलं एवं वयासि)-जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणिं पुव्वपडिवण्णाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरसि, तो णं तुज्झ इदाणिं सुपव्वइयं भविज्जा । तते णं से देवे सोमिलं वंदति नमंसति २ जामेव दिसिं पाउब्भूते जाव पडिगते । तते णं सोमिले माहणरिसी तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे पुव्वपडिवन्नाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरति । तते णं से सोमिले बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमजावमासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणति २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेति २ तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते विराहियसम्मत्ते कालमासे कालं किच्चा सुक्कवडिंसए विमाणे उववातसभाए देवसयणिज्जंसि जाव तोगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववन्ने । तते णं से सुक्के महग्गहे अहुणोववन्ने समाणे जाव भासामणपज्जत्तीए । एवं खलु गोयमा ! सुक्केणं महग्गहेणं सा दिव्वा जाव अभिसमन्नागए एगं पलिओवमठिती । सुक्के णं भंते महग्गहे ततो देवलोगाओ आउक्खए कहिं ग० ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति । एवं खलु जंबू ! समणेणं० निक्खेवओ ॥ ३ ॥

अ० ४ बहुपुत्तिकाज्झयणं ४-जइ णं भंते उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसढे, परिसा निग्गया । तेणं कालेणं २ बहुपुत्तिया देवी सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए

निक्खेवओ त्ति । नवरं विराधितसम्यक्त्वः । अनालोचिताप्रतिक्रान्तः । शुक्रग्रहदेवतया उत्पन्नः ॥

बहुपुत्तियाध्ययने 'उक्खेवओ' त्ति उत्क्षेपः-प्रारम्भवाक्यं, यथा-जइ णं भंते समणेणं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं तच्चवग्गस्स पुप्फियाणं तइयज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स णं अज्झयणस्स पुप्फियाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययनं-३- 'शक्र' परिसमाप्तं

अध्ययनं-४ 'बहुपुत्रिका' आरभ्यते [मूलसूत्र ८]

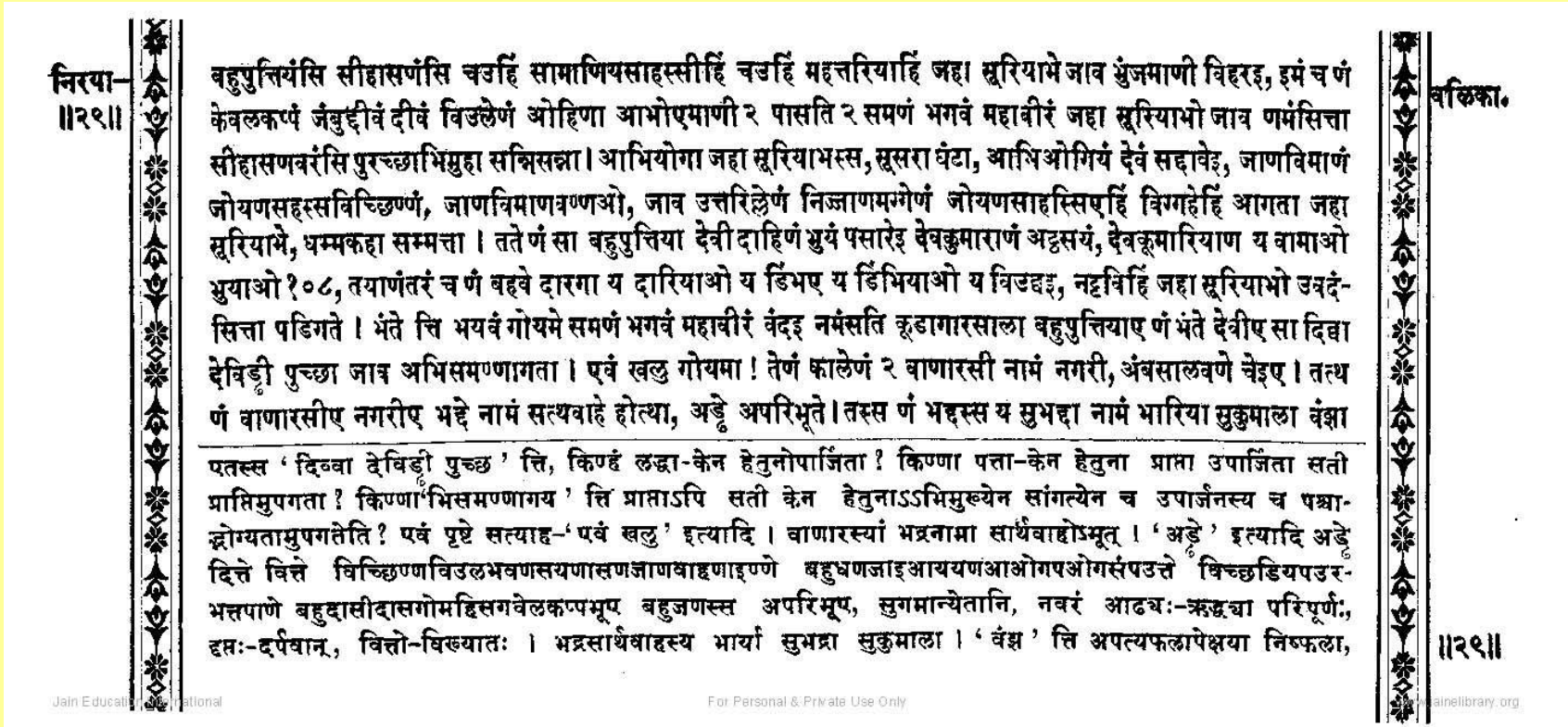

प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

निरया- ॥२९॥

बहुपुत्तियंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं जहा सूरियाभे जाव भुंजमाणी विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासति २ समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभो जाव णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरच्छाभिमुहा सन्निसन्ना। आभियोगा जहा सूरियाभस्स, सूसरा घंटा, आभिओगियं देवं सद्दावेइ, जाणविमाणं जोयणसहस्सविच्छिण्णं, जाणविमाणवण्णओ, जाव उत्तरिल्लेणं निज्जाणमग्गेणं जोयणसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं आगता जहा सूरियाभे, धम्मकहा सम्मत्ता। तते णं सा बहुपुत्तिया देवी दाहिणं भुयं पसारेइ देवकुमाराणं अट्ठसयं, देवकुमारियाण य वामाओ भुयाओ १०८, तयाणंतरं च णं बहवे दारगा य दारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ, नट्टविहिं जहा सूरियाभो उवदंसित्ता पडिगते। भंते त्ति भयवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसति कूडागारसाला बहुपुत्तियाए णं भंते देवीए सा दिव्वा देविड्ढी पुच्छा जाव अभिसमण्णागता। एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं २ वाणारसी नामं नगरी, अंबसालवणे चेइए। तत्थ णं वाणारसीए नगरीए भद्दे नामं सत्थवाहे होत्था, अड्ढे अपरिभूते। तस्स णं भद्दस्स य सुभद्दा नामं भारिया सुकुमाला वंझा

पुष्पिका।

एतस्स 'दिव्वा देविड्ढी पुच्छ' त्ति, किण्हं लद्धा-केन हेतुनोपार्जिता? किण्णा पत्ता-केन हेतुना प्राप्ता उपार्जिता सती प्राप्तिमुपगता? किण्णा'भिसमण्णागय' त्ति प्राप्ताऽपि सती केन हेतुनाऽऽभिमुख्येन सांगत्येन च उपार्जनस्य च पश्चाद्भोग्यतामुपगतेति? एवं पृष्टे सत्याह-'एवं खलु' इत्यादि। वाणारस्यां भद्रनामा सार्थवाहोऽभूत्। 'अड्ढे' इत्यादि अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुधणजाइआययणआओगपओगसंपउत्ते विच्छडियपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलकप्पभूए बहुजणस्स अपरिभूए, सुगमान्येतानि, नवरं आढ्यः-ऋद्ध्या परिपूर्णः, दृप्तः-दर्पवान्, वित्तो-विख्यातः। भद्रसार्थवाहस्य भार्या सुभद्रा सुकुमाला। 'वंझ' त्ति अपत्यफलापेक्षया निष्फला, ॥२९॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [८]

अवियाउरी जाणुकोप्परमाता याविहोत्था । तते णं तीसे सुभद्दाए सत्थवाहीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले कुटुंबजागरियं इमेयारूवे जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव सुलद्धे णं तासिं अम्मगाणं मणुयजम्मजीवितफले, जासिं मन्ने नियकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुल्लावगाणि मंजुल(मम्मण)प्पजंपिताणि थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणगाणि पण्हयंति, पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंगनिवेसियाणि देंति, समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मम्मण (मंजुल)

'अवियाउरि' त्ति प्रसवानन्तरमपत्यमरणेनापि फलतो वन्ध्या भवति अत उच्यते-अवियाउरि त्ति अविजननशीलाऽपत्यानाम्, अत एवाह–जानु कूर्पराणामेव माता-जननी जानुकूर्परमाता, एतान्येव शरीरांशभूतानि तस्याः स्तनौ स्पृशन्ति नापत्यमित्यर्थः, अथवा जानु कूर्पराण्येव मात्रा परप्राणादिसाहाय्यसमर्थः उत्सङ्गनिवेशनीयो वा परिकरो यस्याः न पुत्रलक्षणः स जानुकूर्परमात्रः। 'इमेयारूवे' त्ति इहैवं दृश्यं–"अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था" तत्रायम् एतद्रूपः आध्यात्मिकः–आत्माश्रितः चिन्तितः–स्मरणरूपः मनोगतो–मनोविकाररूपः संकल्पो–विकल्पः समुत्पन्नः। 'धन्नाओ णं ताओ' इत्यादि धन्या–धनमर्हन्ति लप्स्यन्ते वा यास्ता धन्याः इति यासामित्यपेक्षया, अम्वाः–स्त्रियः पुण्याः–पवित्राः कृतपुण्याः–कृतसुकृताः कृतार्थाः–कृतप्रयोजनाः कृतलक्षणाः–सफलीकृतलक्षणाः। 'सुलद्धे णं तासिं अम्मगाणं मणुयजम्मजीवियफले' सुलब्धं च तासां मनुजजन्म जीवितफलं च। 'जासिं' ति यासां मन्ये इति वितर्कार्थो निपातः। निजकुक्षिसंभूतानि डिम्भरूपाणीत्यर्थः। स्तनदुग्धे लुब्धानि यानि तानि तथा। मधुराः समुल्लापा येषां तानि तथा। मन्मनम्–अव्यक्तमीषत्स्खलितं प्रजल्पितं येषां तानि तथा। स्तनमूलात् कक्षादेशभागमभिसरन्ति मुग्धकानि–अव्यक्तविज्ञानानि भवन्ति। पण्हयंति–दुग्धं पिबन्ति। पुनरपि कोमलकमलोपमाभ्यां हस्ताभ्यां गृहीत्वा उत्सङ्गे निवेशितानि सन्ति। ददति समुल्लापकान्, पुनः पुनः मञ्जुल-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

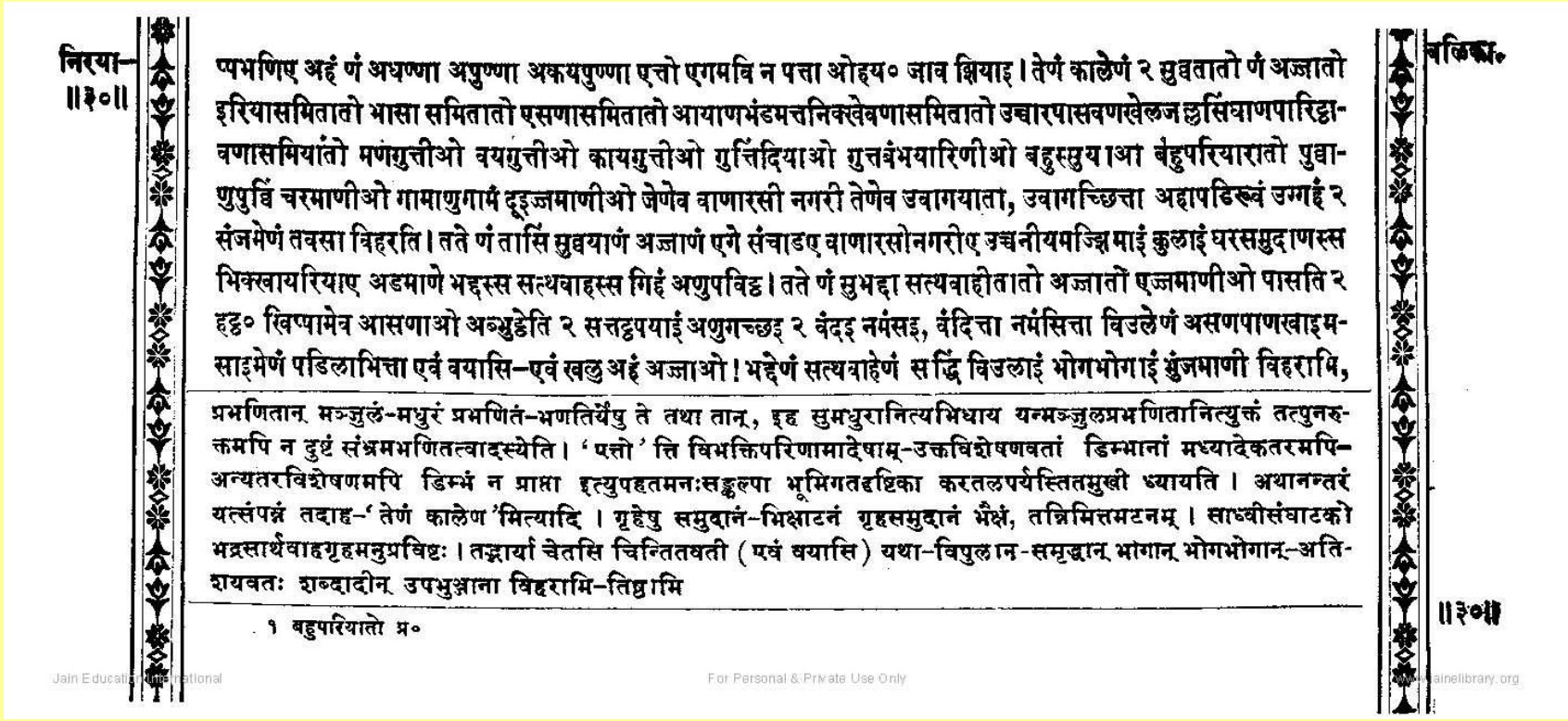

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

निरया- ॥३०॥

प्पभणिए अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता ओहय० जाव झियाइ। तेणं कालेणं २ सुव्वतातो णं अज्जातो इरियासमितातो भासासमितातो एसणासमितातो आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमितातो उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणासमियातो मणगुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिंदियाओ गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरियारातो पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नगरी तेणेव उवागयाता, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं २ संजमेणं तवसा विहरति। तते णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसीनगरीए उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे भद्दस्स सत्थवाहस्स गिहं अणुपविट्ठे। तते णं सुभद्दा सत्थवाही तातो अज्जातो एज्जमाणीओ पासति २ हट्ठ० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेति २ सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता एवं वयासि-एवं खलु अहं अज्जाओ! भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि,

प्रभणितान् मञ्जुलं-मधुरं प्रभणितं-भणतिर्येषु ते तथा तान्, इह सुमधुरानित्यभिधाय यन्मञ्जुलप्रभणितानित्युक्तं तत्पुनरुक्तमपि न दुष्टं संभ्रमभणितत्वादस्येति। 'पत्तो' त्ति विभक्तिपरिणामादेषाम्-उक्तविशेषणवतां डिम्भानां मध्यादेकतरमपि-अन्यतरविशेषणमपि डिम्भं न प्राप्ता इत्युपहतमनःसङ्कल्पा भूमिगतदृष्टिका करतलपर्यस्तितमुखी ध्यायति। अथानन्तरं यत्संपन्नं तदाह-'तेणं कालेण'मित्यादि। गृहेषु समुदानं-भिक्षाटनं गृहसमुदानं भैक्षं, तन्निमित्तमटनम्। साध्वीसंघाटको भद्रसार्थवाहगृहमनुप्रविष्टः। तद्भार्या चेतसि चिन्तितवती (एवं वयासि) यथा-विपुलान्-समृद्धान् भोगान् भोगभोगान्-अतिशयवतः शब्दादीन् उपभुञ्जाना विहरामि-तिष्ठामि

१ बहुपरियातो प्र०

वल्लिका० ॥३०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जाव एत्तो एगमवि न पत्ता, तं तुब्भे अज्जाओ! बहुणायातो बहुपढियातो बहूणि गामागरनगर जाव सण्णिवेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभितीणं गिहाइं अणुपविसह, अत्थि से केति कहिं चि विज्जापओए वा मंतप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा बत्थिकम्मं वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धे जेणं अहं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जा? तते णं ताओ अज्जाओ सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारीओ, नो खलु कप्पति अम्हं एयमट्ठं कण्णेहिं त्रिणिसामित्तए, किमंग पुण उद्दिसित्तए वा समायरित्तए वा अम्हे णं देवाणुप्पिए! णवरं तव विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेमो। तते णं सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा तातो अज्जातो तिखुत्तो वंदति नमंसति एवं वदासी–सद्दहामि णं अज्जाओ! निग्गंथं पावयणं पत्तियामि रोएमि णं अज्जाओ निग्गंथीओ! एवमेयं तहमेयं अवितहमेयं जाव सावगधम्मं पडिवज्जए।

केवलं तथापि डिम्भादिकं न प्रजन्ये–न जनितवती अहं, केवलं ता एव स्त्रियो धन्या यासां पुत्रादि संपद्यत इति खेदपरायणा 'ह्यति' (ऽहं वर्ते)। तदत्रार्थे यूयं किमपि जानीध्वे न वेति? यद्विषये परिज्ञानं संभावयति तदेव विद्यामन्त्रप्रयोगादिकं वक्तुमाह। केवलिप्रज्ञप्तधर्मश्च–"जीवदय सच्चवयणं, परधणपरिवज्जणं सुसीलं च। खंती पंचिंदियनिग्गहो य धम्मस्स मूलाइं॥१॥" इत्यादिकः। 'एवमेयं' ति एवमेतदिति साध्वीवचने प्रत्या (त्यया) विष्करणम्। एतदेव स्फुटयति–'तहमेयं भंते!' तथैवैतद्यथा भगवत्यः प्रतिपादयन्ति यदेतद्यूयं वदथ तथैवैतत्। 'अवितहमेयं' ति सत्यमेतदित्यर्थः। 'असंदिद्धमेयं' ति संदेहवर्जितमेतत्। एतान्येकार्थान्यत्यादरप्रदर्शनायोक्तानि सत्योऽयमर्थो यद्यूयं वदथ इत्युक्त्वा वदन्ते–वाग्भिः स्तौति, नमस्यति कायेन प्रणमति, वंदित्ता नमंसित्ता सावगधम्मं पडिवज्जइ देवगुरुधर्मप्रतिपत्तिं कुरुते।

१ वाग्भिश्च प्रं०। २ नमस्यति च प्रं०। ३ प्रणमति च प्रं०।

Jain Education International · For Personal & Private Use Only · www.jainelibrary.org

अहासुहं देवा० ! मा पडिबंधं। तते णं सा सुभद्दा सत्थ० तासिं अज्जाणं अंतिए जाव पडिवज्जति २ तातो अज्जातो वंदइ नमंसइ पडिविसज्जति। तते णं सुभद्दा सत्थ० समणोवासिया जाया जाव विहरति। तते णं तीसे सुभद्दाए समणोवासियाए अण्णदा कदायि पुव्वरत्त० कुडुंब० अयमेया० जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं [सु] भद्देणं सत्थ० विउलाइं भोगभोगाइं जाव विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा २, तं सेयं खलु ममं कल्लं पा० जाव जलंते भद्दस्स आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए अज्जा भवित्ता अगाराओ जाव पव्वइत्तए, एवं संपेहेति २ त्ता कल्ले जेणेव भद्दे सत्थवाहे तेणेव उवागते, करतल० एवं वयासी– एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं विउलाइं भोग जाव विहरामि, नो चेव णं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अणुण्णाया समाणी सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए। तते णं से भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थ० एवं वदासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इदाणिं मुंडा जाव पव्वयाहि, भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, ततो पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वयाहि। तते णं सुभद्दा सत्थ० भद्दस्स एयमट्ठं नो आढाति नो परिजाणति दुच्चं पि तच्चं पि भद्दा सत्थ० एवं वदासी–इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी जाव पव्वइत्तए। तते णं से भद्दे स० जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहि य एवं पन्नवणाहि य सण्णवणा० विण्णवणाहि य

यथासुखं देवानुप्रिये ! अत्रार्थे मा प्रतिबन्धं-प्रतिघातरूपं प्रमादं मा कृथाः । 'आघवणाहि य' त्ति आख्यापनाभिश्च सामान्यतः प्रतिपादनैः । 'पण्णवणाहि य' त्ति प्रज्ञापनाभिश्च–विशेषतः कथनैः । 'सण्णवणाहिय' त्ति संज्ञापनाभिश्च–संबोधनाभिः । 'विन्नवणाहि य' त्ति विज्ञापनाभिश्च–विज्ञप्तिकाभिः सप्रणयप्रार्थनैः । चकाराः समुच्चयार्थाः ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत
सूत्रांक
[–]

दीप
अनुक्रम
[८]

आघवित्तए वा जाव विण्णवित्तए वा ताहे अकामते चेव सुभद्दाए निक्खमणं अणुमण्णित्था। तते णं से भद्दे स० विउलं असणं ४ उवक्खडावेति, मित्तनाति० ततो पच्छा भोयणवेलाए जाव मित्तनाति० सक्कारेति सम्माणेति, सुभद्दं सत्थ० ण्हायं जाव पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेति। ततो सा सुभद्दा सत्थ० मित्तनाइ जाव संबंधिसंपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं वाणारसीनगरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवा० २ पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेति, सुभद्दं सत्थवाहिं सीयातो पच्चोरुहेति। तते णं भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं पुरतो काउं जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवा २ सुव्वयाओ अज्जाओ वंदति नमंसति २ एवं वदासी– एवं खलु देवाणुप्पिया सुभद्दा सत्थवाही ममं भारिया इट्ठा कंता जाव मा णं वातिता पित्तिया सिंभिया सन्निवातिया विविहा रोयातंका फुसंतु, एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं, देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वयाति, तं एयं अहं देवाणुप्पियाणं सीसिणिभिक्खं दलयामि, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सीसिणीभिक्खं। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं। तते णं सा सुभद्दा स० सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठा २ सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति २ जेणेव सुव्वयातो अज्जाओ तेणेव उवा २ सुव्वयाओ

'आघवित्तए' त्ति आख्यातुं वा प्रज्ञापयितुं वा संज्ञापयितुं वा विज्ञापयितुं वा न शक्नोतीति प्रक्रमः सुभद्रां भार्यां व्रतग्रहणान्निषेधयितुं 'ताहे' इति तदा 'अकामए चेव' अनिच्छन्नेव सार्थवाहो निष्क्रमणं-व्रतग्रहणोत्सवं अनुमनितवान् (अनुमतवान्) इति। किं वहुना? मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइति। इत उद्र्ध्वं सुगमम्।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

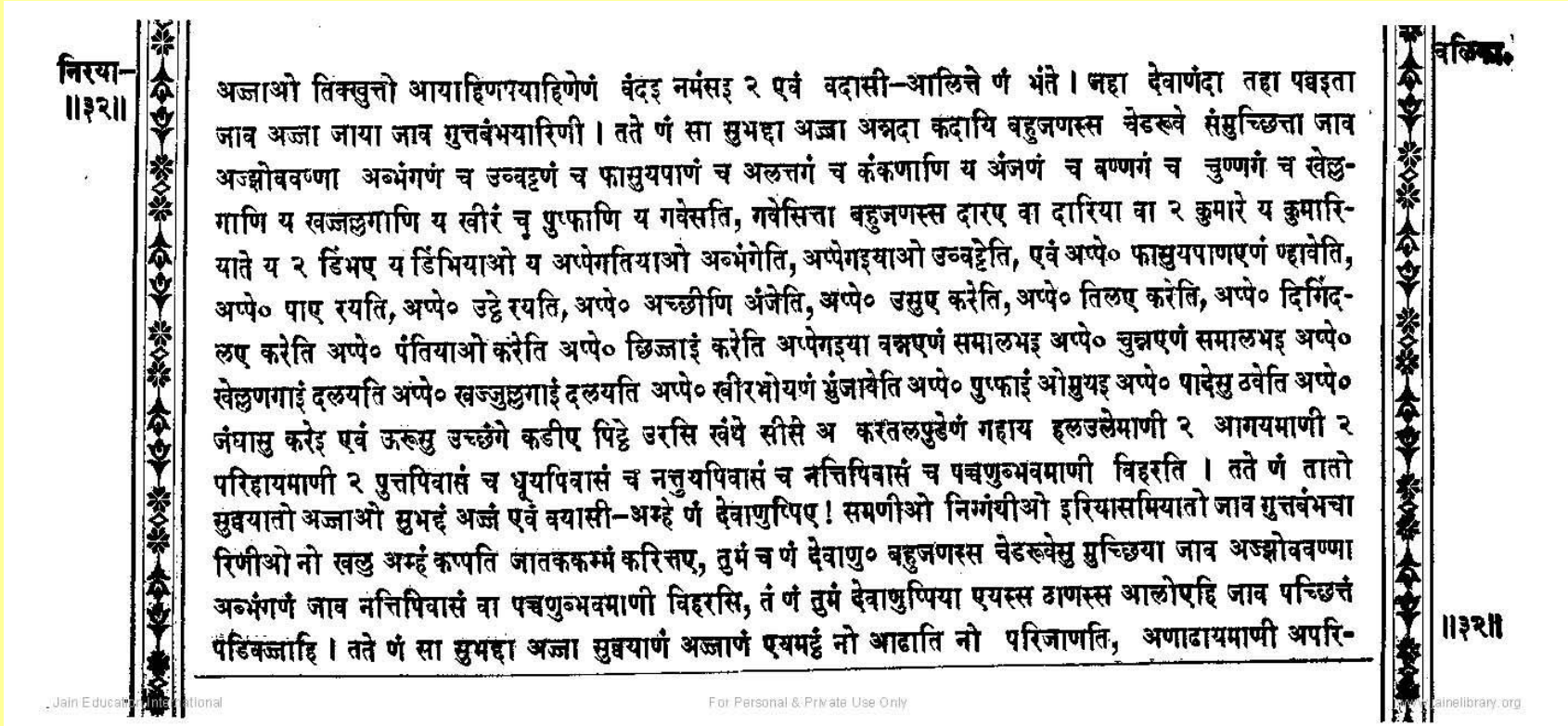

आगम (२१)	“पुष्पिका” - उपांगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) अध्ययनं [४] -- मूलं [८]
प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] “पुष्पिका” मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

निरया- ||३२||

अज्जाओ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणेणं वंदइ नमंसइ २ एवं वदासी—आलित्ते णं भंते। जहा देवाणंदा तहा पव्वइता जाव अज्जा जाया जाव गुत्तबंभयारिणी। तते णं सा सुभद्दा अज्जा अन्नदा कदायि बहुजणस्स चेडरूवे संमुच्छित्ता जाव अज्झोववण्णा अब्भंगणं च उव्वट्टणं च फासुयपाणं च अलत्तगं च कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेल्लगाणि य खज्जल्लगाणि य खीरं च पुप्फाणि य गवेसति, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए वा दारिया वा २ कुमारे य कुमारियाते य २ डिंभए य डिंभियाओ य अप्पेगतियाओ अब्भंगेति, अप्पेगइयाओ उव्वट्टेति, एवं अप्पे० फासुयपाणएणं ण्हावेति, अप्पे० पाए रयति, अप्पे० उट्ठे रयति, अप्पे० अच्छीणि अंजेति, अप्पे० उसुए करेति, अप्पे० तिलए करेति, अप्पे० दिगिंदलए करेति अप्पे० पंतियाओ करेति अप्पे० छिज्जाइं करेति अप्पेगइया वन्नएणं समालभइ अप्पे० चुन्नएणं समालभइ अप्पे० खेल्लणगाइं दलयति अप्पे० खज्जुल्लगाई दलयति अप्पे० खीरभोयणं भुंजावेति अप्पे० पुप्फाइं ओमुयइ अप्पे० पादेसु ठवेति अप्पे० जंघासु करेइ एवं ऊरूसु उच्छंगे कडीए पिट्ठे उरसि खंधे सीसे अ करतलपुडेणं गहाय हलउलेमाणी २ आगयमाणी २ परिहायमाणी २ पुत्तपिवासं च धूयपिवासं च नत्तुयपिवासं च नत्तिपिवासं च पच्चणुब्भवमाणी विहरति। तते णं तातो सुव्वयातो अज्जाओ सुभद्दं अज्जं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियातो जाव गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पति जातककम्मं करित्तए, तुमं च णं देवाणु० बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा अब्भंगणं जाव नत्तिपिवासं वा पच्चणुब्भवमाणी विहरसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिया एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पच्छित्तं पडिवज्जाहि। तते णं सा सुभद्दा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाति नो परिजाणति, अणाढायमाणी अपरि-

वल्लिका. ||३२||

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत
सूत्रांक
[–]

दीप
अनुक्रम
[८]

जाणमाणी विहरति । तते णं तातो समणीओ निग्गंथीओ सुभद्दं अज्जं हीलेंति निंदंति खिंसंति गरहंति अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति । तते णं तीसे सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारिज्जमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–जया णं अहं अगारवासं वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता तप्पभिइं च णं अहं परवसा, पुव्विं च समणीओ निग्गंथीओ आढेंति परिजाणेंति, इयाणिं नो आढाइंति नो परिजाणंति, तं सेयं खलु मे कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडियक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियातो पडिनिक्खमेति २ पाडियक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरति । तते णं सा सुभद्दा अज्जा अज्जाहिं अणोहट्टिया अणिवारिता सच्छंदमती बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिता जाव अब्भंगणं च जाव नत्तिपिवासं च पच्चणुब्भवमाणी विहरति । तते णं सा सु द्द अज्जा पासत्था पासत्थविहारी एवं ओसण्णा० कुसीला० संसत्ता संसत्तविहारी अहाच्छंदा अहाच्छंदविहारी बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणति २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं तोसं भत्ताइं २ अणसणे छेदित्ता २ तस्स ठाणस्स अणालोइयप्पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्ताए ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववण्णा, तेणं सा बहुपुत्तिया देवी

'जाव पाडियक्कं उवस्सयं' ति सुव्रतार्यिकोपाश्रयात् पृथक् विभिन्नमुपाश्रयं प्रतिपद्य विचरति-आस्ते । 'अज्जाहिं अणोहट्टिय' त्ति यो बलाद्धस्तादौ गृहीत्वा प्रवर्तमानं निवारयति सोऽपघट्टिकः तदभावादनपघट्टिका, अनिवारिता–निषेधकरहिता, अतएव स्वच्छन्दमतिका । ज्ञानादीनां पार्श्वे तिष्ठतीति पार्श्वस्था इत्यादि सुप्रतीतम् ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

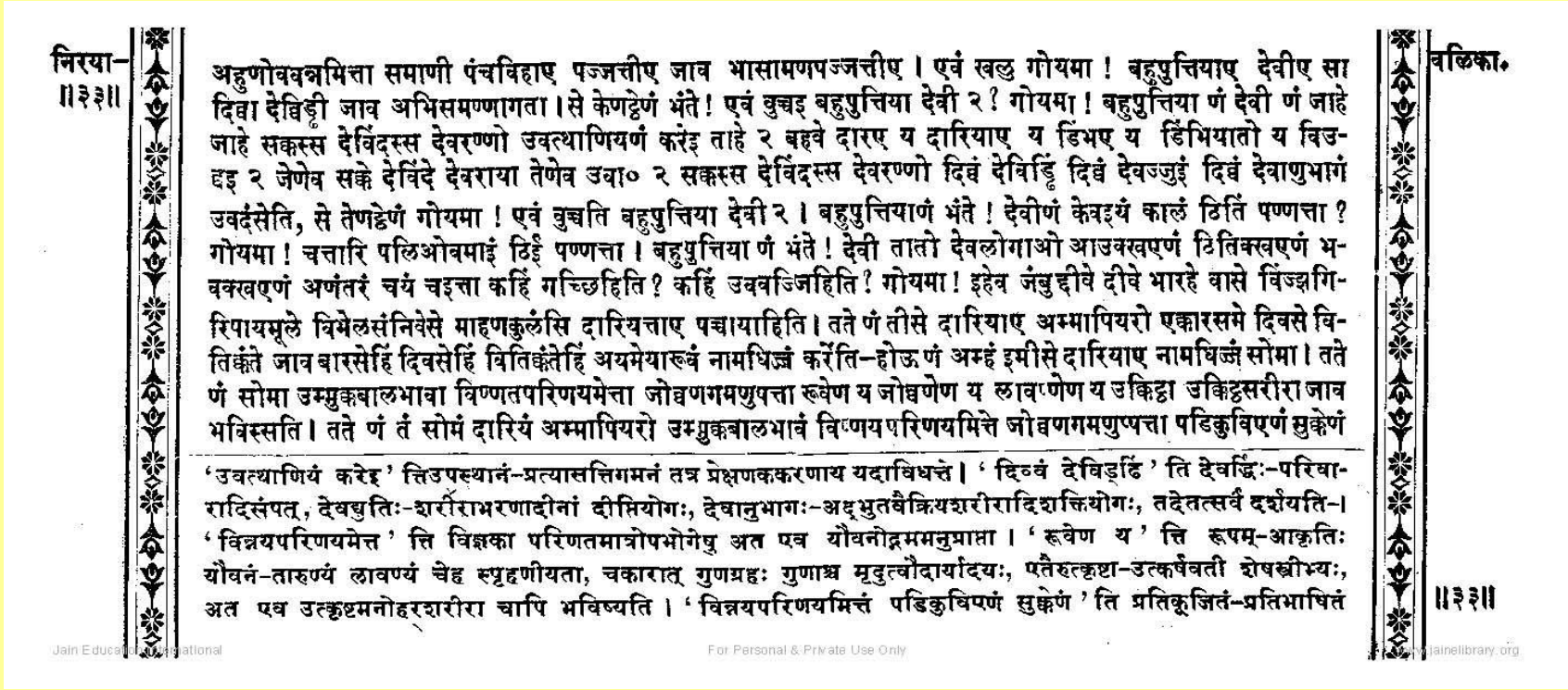

प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] “पुष्पिका” मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

निरया- ॥३३॥

अहुणोववन्नमित्ता समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जाव भासामणपज्जत्तीए । एवं खलु गोयमा ! बहुपुत्तियाए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ बहुपुत्तिया देवी २ ? गोयमा ! बहुपुत्तिया णं देवी णं जाहे जाहे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उवत्थाणियणं करेइ ताहे २ बहवे दारए य दारियाए य डिंभए य डिंभियातो य विउव्वइ २ जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवा० २ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं उवदंसेति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति बहुपुत्तिया देवी २ । बहुपुत्तियाणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठितिं पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । बहुपुत्तिया णं भंते ! देवी तातो देवलोगाओ आउक्खएणं ठितिक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंज्झगिरिपायमूले विभेलसंनिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति । तते णं तीसे दारियाए अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वितिक्कंते जाव बारसेहिं दिवसेहिं वितिक्कंतेहिं अयमेयारूवं नामधिज्जं करेंति–होऊ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जं सोमा । तते णं सोमा उम्मुक्कबालभावा विण्णतपरिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाव भविस्सति । तते णं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिकुविएणं सुक्केणं

‘उवत्थाणियं करेइ’ त्तिउपस्थानं–प्रत्यासत्तिगमनं तत्र प्रेक्षणककरणाय यदाविधत्ते । ‘दिव्वं देविड्ढिं’ ति देवर्द्धिः–परिवारादिसंपत्, देवद्युतिः–शरीराभरणादीनां दीप्तियोगः, देवानुभागः–अद्भुतवैक्रियशरीरादिशक्तियोगः, तदेतत्सर्वं दर्शयति–। ‘विन्नयपरिणयमेत्त’ त्ति विज्ञका परिणतमात्रोपभोगेषु अत एव यौवनोद्गममनुप्राप्ता । ‘रूवेण य’ त्ति रूपम्–आकृतिः यौवनं–तारुण्यं लावण्यं चेह स्पृहणीयता, चकारात् गुणग्रहः गुणाश्च मृदुत्वौदार्यादयः, एतैरुत्कृष्टा–उत्कर्षवती शेषस्त्रीभ्यः, अत एव उत्कृष्टमनोहरशरीरा चापि भविष्यति । ‘विन्नयपरिणयमित्तं पडिकुविएणं सुक्केणं’ ति प्रतिकूजितं–प्रतिभाषितं

वलिका. ॥३३॥

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

पडिरूवएणं नियगस्स भायणिज्जस्स रट्ठकूडयस्स भारियत्ताए दलयिस्सति । सा णं तस्स भारिया भविस्सति इट्ठा कंता जाव भंडकरंडगसमाणा तिल्लकेला इव सुसंगोविआ चेलपेला(डा) इव सुसंपरिहिता रयणकरंडगतो विव सुसारक्खिया सुसंगोविता माणंसीयं जाव विविहा रोयातंका फुसंतु । तते णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी संवच्छरे २ जुयलगं पयायमाणी सोलसेहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाति । तते णं सा सोमा माहणी तेहिं बहूहिं दारगेहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य अप्पेगइएहि उत्ताणसेज्जएहि य अप्पेगइएहि य थणियाएहि य अप्पेगइएहि पीहगपाएहिं अप्पे० परंगणएहिं अप्पेगइएहिं परक्कममाणेहिं अप्पेगइएहिं पक्खोलणएहिं अप्पे० थणं मग्गमाणेहिं अप्पे० खीरं मग्गमाणेहिं अप्पे० खिल्लणयं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खज्जगं मग्गमाणेहिं अप्पे० कूरं मग्गमाणेहिं पाणियं मग्गमाणेहिं हसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्कोसमाणेहिं अक्कुस्समाणेहिं हणमाणेहिं हम्ममाणेहिं

यत् शुक्लं द्रव्यं तेन कृत्वा प्रभूतमपि वाञ्छितं देयद्रव्यं दत्त्वा प्रभूताभरणादिभूषितं कृत्वाऽनुकूलेन विनयेन प्रियभाषणतया भवद्योग्येयमित्यादिना 'इट्ठा' वल्लभा, 'कंता' कमनीयत्वात्, 'पिया' सदा प्रेमविषयत्वात्, 'मणुण्णा' सुन्दरत्वात्, एवं 'संमया अणुमया' इत्यादि दृश्यम् । आभरणकरण्डकसमानोपादेयत्वादिना । तैलकेला सौराष्ट्रप्रसिद्धो मृन्मयस्तैलस्य भाजनविशेषः, स च भङ्गभयाल्लोठनभयाच्च सुष्ठु संगोप्यते एवं साऽपि तथोच्यते । 'चेलपेडा इवे'ति वस्त्रमञ्जूषेवेत्यर्थः । 'रयणकरंडग' इति इन्द्रनीलादिरत्नाश्रयः सुसंरक्षितः सुसंगोपितश्च क्रियते । 'जुयलगं' दारकदारिकादिरूपं प्रजनितवती । पुत्रकैः पुत्रिकाभिश्च वर्षदशकादिप्रमाणतः कुमारकुमारिकादिव्यपदेशभाक्त्वं डिम्भडिम्भिकाश्च लघुतरतया प्रोच्यन्ते । अप्येके केचन 'परंगणेहिं' ति नृत्यद्भिः । 'परक्कममाणेहिं' ति उल्ललद्भिः । 'पक्खोलणएहिं' ति प्रस्खलद्भिः । हसद्भिः, रुष्यद्भिः,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

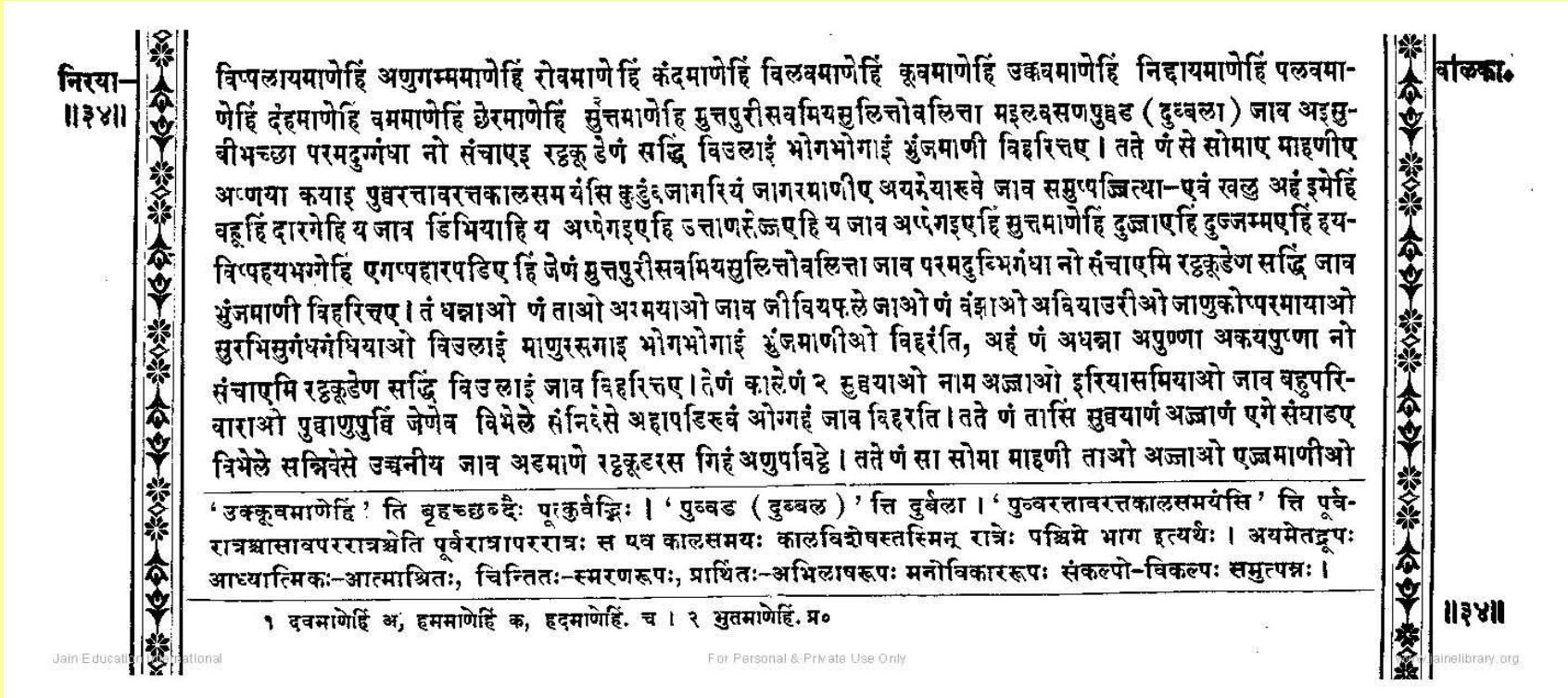

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

प्रत
सूत्रांक
[--]
दीप
अनुक्रम
[८]

निरया- ॥३४॥ वालिका॰

विप्पलायमाणेहिं अणुगम्ममाणेहिं रोवमाणेहिं कंदमाणेहिं विलवमाणेहिं कूवमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं निद्दायमाणेहिं पलवमाणेहिं दंहमाणेहिं वममाणेहिं छेरमाणेहिं मुत्तमाणेहि मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता मइलवसणपुव्वड (दुब्बला) जाव अइसुबीभच्छा परमदुग्गंधा नो संचाएइ रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए। तते णं से सोमाए माहणीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था--एवं खलु अहं इमेहिं वहूहिं दारगेहि य जाव डिंभियाहि य अप्पेगइएहि उत्ताणसेज्जएहि य जाव अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहि दुज्जाएहि दुज्जम्मएहिं हयविप्पहयभग्गेहि एगप्पहारपडिएहिं जेणं मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता जाव परमदुब्भिगंधा नो संचाएमि रट्ठकूडेण सद्धिं जाव भुंजमाणी विहरित्तए। तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जीवियफले जाओ णं वंझाओ अवियाउरीओ जाणुकोप्परमायाओ सुरभिसुगंधगंधियाओ विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति, अहं णं अधन्ना अपुण्णा अकयपुण्णा नो संचाएमि रट्ठकूडेण सद्धिं विउलाइं जाव विहरित्तए। तेणं कालेणं २ सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ जाव बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं जेणेव विभेले संनिवेसे अहापडिरूवं ओग्गहं जाव विहरति। तते णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए विभेले सन्निवेसे उच्चनीय जाव अडमाणे रट्ठकूडस्स गिहं अणुपविट्ठे। तते णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ

'उक्कूवमाणेहिं' ति बृहच्छब्दैः पूत्कुर्वद्भिः। 'पुव्वड (दुब्बल)' त्ति दुर्बला। 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' त्ति पूर्वरात्रश्चासावपररात्रश्चेति पूर्वरात्रापररात्रः स एव कालसमयः कालविशेषस्तस्मिन् रात्रेः पश्चिमे भाग इत्यर्थः। अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः--आत्माश्रितः, चिन्तितः--स्मरणरूपः, प्रार्थितः--अभिलाषरूपः मनोविकाररूपः संकल्पो--विकल्पः समुत्पन्नः।

१ दवमाणेहिं अ, हममाणेहिं क, हदमाणेहिं. च। २ मुतमाणेहिं. म०

॥३४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

प्रत
सूत्रांक
[--]

दीप
अनुक्रम
[८]

पासति २ हट्ठ० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेति २ सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छति २ वंदइ, नमंसइ, विउलेणं असण ४ पडिलाभित्ता एवं वयासी-एवं खलु अहं अज्जाओ रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं जाव संवच्छरे २ जुगलं पयामि, सोलसहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाया, तते णं अहं तेहिं बहूहिं दारएहि य जाव डिंभियाहि य अप्पेगतिएहिं उत्ताणसिज्जएहिं जाव सुत्तमाणेहिं दुज्जातेहिं जाव नो संचाएमि विहरत्तए, तमिच्छामि णं अज्जाओ तुम्हं अंतिए धम्मं निसामित्तए। तते णं ताओ अज्जातो सोमाते माहणीए विचित्तं जाव केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेति। तते णं सा सोमा माहणी तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियया ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं अज्जाओ! निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि णं अज्जातो निग्गंथं पावयणं एवमेयं अज्जातो जाव से जहेयं तुब्भे वयह जं नवरं अज्जातो! रट्ठकूडं आपुच्छामि। तते णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं। तते णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जातो वंदइ नमंसइ २ त्ता पडिविसज्जेति। तते णं सा सोमा माहणी जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागता करतल एवं वयासी-एवं खलु मए देवाणुप्पिया! अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते से वि य णं धम्मे इच्छिते जाव अभिरुचिते, तते णं अहं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया सुव्वयाणं अज्जाणं जाव पव्वइत्तए। तते णं से रट्ठकूडे सोमं माहणिं एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पिए! इदाणिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयाहि, भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, ततो पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयाहि। तते णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडस्स एयमट्ठं पडिसुणेति। तते णं सा सोमा माहणी ण्हाया जाव सरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमति २ विभेलं संनिवेसं मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवा० २ सुव्वयाओ अज्जाओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [८]

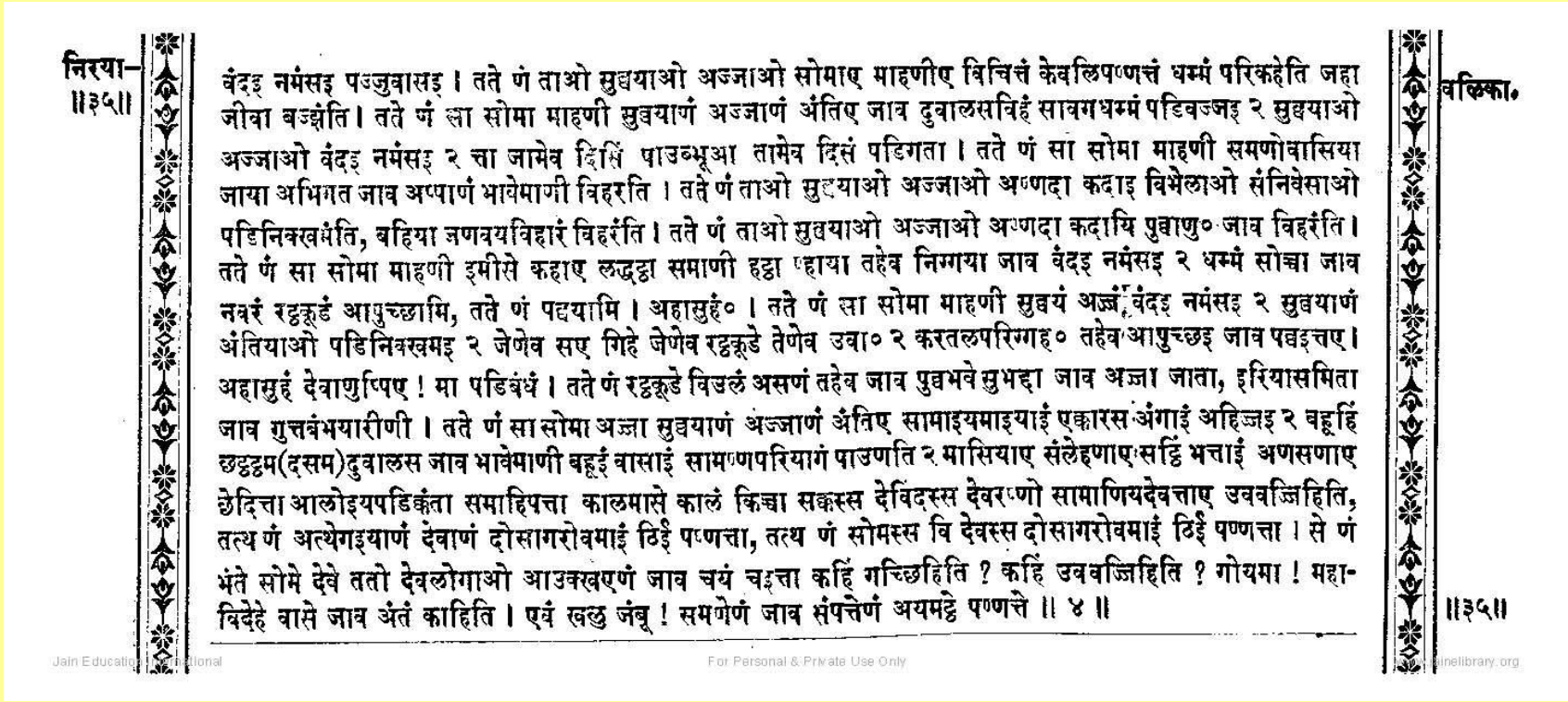

निरया- ॥३८॥ वलिका॰

वंदइ नमंसइ पज्जुवासइ । तते णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेति जहा जीवा बज्झंति। तते णं सा सोमा माहणी सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसं पडिगता । तते णं सा सोमा माहणी समणोवासिया जाया अभिगत जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति । तते णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णदा कदाइ विभेलाओ संनिवेसाओ पडिनिक्खमंति, बहिया जणवयविहारं विहरंति । तते णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णदा कदायि पुव्वाणु० जाव विहरंति। तते णं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठा ण्हाया तहेव निग्गया जाव वंदइ नमंसइ २ धम्मं सोच्चा जाव नवरं रट्ठकूडं आपुच्छामि, तते णं पव्वयामि । अहासुहं० । तते णं सा सोमा माहणी सुव्वयं अज्जं वंदइ नमंसइ २ सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवा० २ करतलपरिग्गह० तहेव आपुच्छइ जाव पव्वइत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं । तते णं रट्ठकूडे विउलं असणं तहेव जाव पुव्वभवे सुभद्दा जाव अज्जा जाता, इरियासमिता जाव गुत्तबंभयारीणी । तते णं सा सोमा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ २ बहूहिं छट्ठट्ठम(दसम)दुवालस जाव भावेमाणी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणति २ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववज्जिहिति, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दोसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं सोमस्स वि देवस्स दोसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । से णं भंते सोमे देवे ततो देवलोगाओ आउक्खएणं जाव चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिति । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ ४ ॥ ॥३८॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययनं-४ 'बहुपुत्रिका' परिसमाप्तं

अ० ५

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसरिते, परिसा निग्गया, तेणं कालेणं २ पुण्णभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा सूरियाभो जाव बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगते कूडागारसाला पुव्वभवपुच्छा एवं गोयमा ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मणि वइया नामं नगरी होत्था रिद्ध, चंदो, ताराइणे चेइए, तत्थ णं मणिवइयाए नगरीए पुण्णभद्दे नामं गाहावई परिवसति अड्ढे । तेणं कालेणं २ थेरा भगवंतो जातिसंपण्णा जाव जीवियासमरणभयविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरियारा पुव्वाणुपुव्विं जाव समोसढा, परिसा निग्गया । तते णं से पुण्णभद्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव पण्णत्तीए गंगदत्ते तहेव निग्गच्छई जाव निवखंतो जाव गुत्तबंभचारी । तते णं से पुण्णभद्दे अणगारे भगवंताणं अंतिए सामाइयमादियाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ २ बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणति २ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे उववातसभाते देवसयणिज्जंसि जाव भासामणपज्जत्तीए । एवं खलु गोयमा ! पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागता । पुण्णभद्दस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! दोसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । पुण्णभद्देणं भंते ! देवे तातो देवलोगातो जाव कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति ! एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवता जाव संपत्तेणं निक्खेवओ ॥ ५ ॥

अ० ६

जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे, गुणसिलए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययनं-५- 'पूर्णभद्र' आरब्धं एवं परिसमाप्तं [मूलसूत्र ९]

अध्ययनं-६- 'माणिभद्र' आरभ्यते [मूलसूत्र १०]

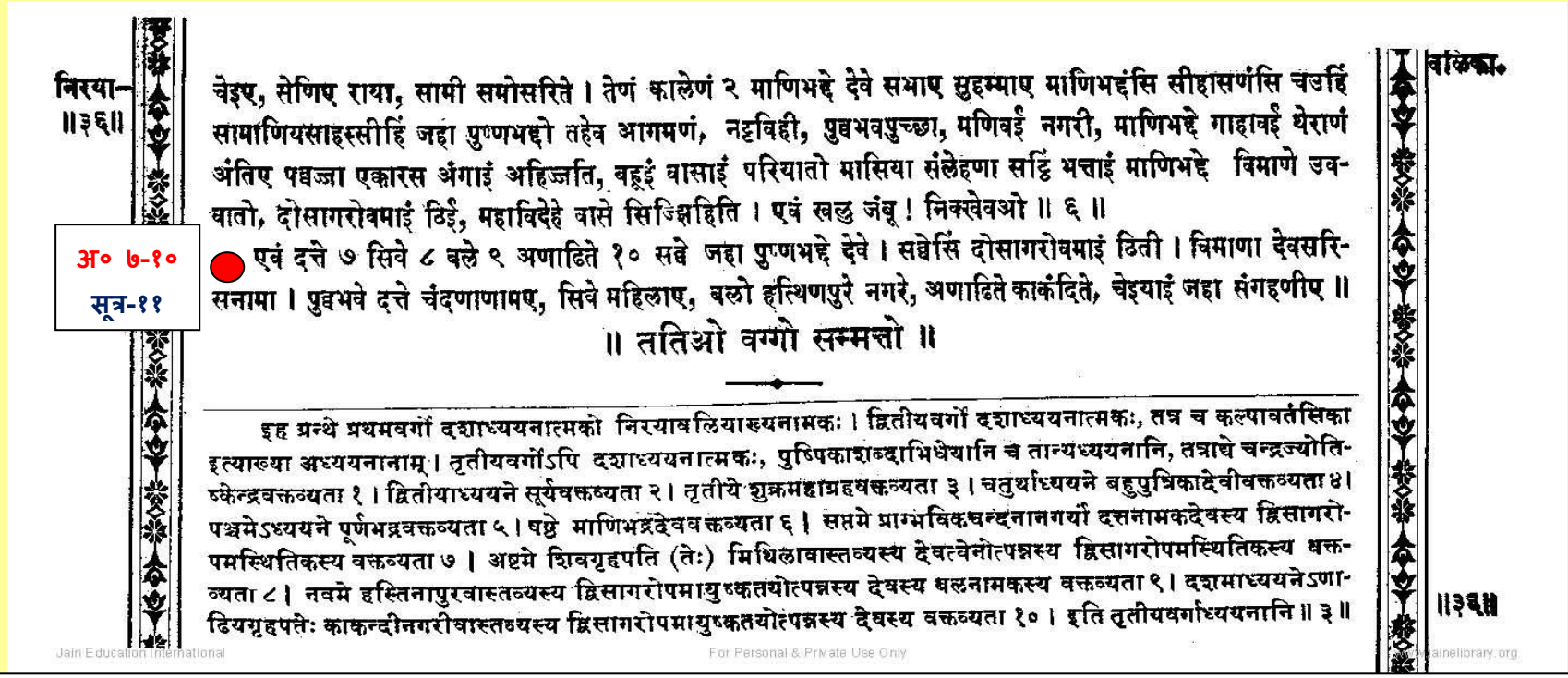

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२१], उपांग सूत्र - [१०] "पुष्पिका" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:

निरया– ॥३६॥

चेइए, सेणिए राया, सामी समोसरिते। तेणं कालेणं २ माणिभद्दे देवे सभाए सुहम्माए माणिभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा पुण्णभद्दो तहेव आगमणं, नट्टविही, पुव्वभवपुच्छा, मणिवई नगरी, माणिभद्दे गाहावई थेराणं अंतिए पव्वज्जा एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, बहूइं वासाइं परियातो मासिया संलेहणा सट्ठि भत्ताइं माणिभद्दे विमाणे उववातो, दोसागरोवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति। एवं खलु जंबू! निक्खेवओ ॥ ६ ॥

अ० ७-१० सूत्र-११

एवं दत्ते ७ सिवे ८ बले ९ अणाढिते १० सव्वे जहा पुण्णभद्दे देवे। सव्वेसिं दोसागरोवमाइं ठिती। विमाणा देवसरिसनामा। पुव्वभवे दत्ते चंदणाणामए, सिवे महिलाए, बलो हत्थिणपुरे नगरे, अणाढिते काकंदिते, चेइयाइं जहा संगहणीए ॥

॥ ततिओ वग्गो सम्मत्तो ॥

इह ग्रन्थे प्रथमवर्गो दशाध्ययनात्मको निरयावलियाख्यनामकः। द्वितीयवर्गो दशाध्ययनात्मकः, तत्र च कल्पावतंसिका इत्याख्या अध्ययनानाम्। तृतीयवर्गोऽपि दशाध्ययनात्मकः, पुष्पिकाशब्दाभिधेयानि च तान्यध्ययनानि, तत्राद्ये चन्द्रज्योतिष्केन्द्रवक्तव्यता १। द्वितीयाध्ययने सूर्यवक्तव्यता २। तृतीये शुक्रमहाग्रहवक्तव्यता ३। चतुर्थाध्ययने बहुपुत्रिकादेवीवक्तव्यता ४। पञ्चमेऽध्ययने पूर्णभद्रवक्तव्यता ५। षष्ठे माणिभद्रदेववक्तव्यता ६। सप्तमे प्राग्भविकचन्दनानगर्यां दत्तनामकदेवस्य द्विसागरोपमस्थितिकस्य वक्तव्यता ७। अष्टमे शिवगृहपति (तेः) मिथिलावास्तव्यस्य देवत्वेनोत्पन्नस्य द्विसागरोपमस्थितिकस्य वक्तव्यता ८। नवमे हस्तिनापुरवास्तव्यस्य द्विसागरोपमायुष्कतयोत्पन्नस्य देवस्य बलनामकस्य वक्तव्यता ९। दशमाध्ययनेऽणाढियगृहपतेः काकन्दीनगरीवास्तव्यस्य द्विसागरोपमायुष्कतयोत्पन्नस्य देवस्य वक्तव्यता १०। इति तृतीयवर्गाध्ययनानि ॥ ३ ॥

वल्लिका. ॥३६॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययनं-६- 'माणिभद्र' परिसमाप्तं अध्ययनानि ७-१० दत्त, शिव आदि आरब्धानि एवं परिसमाप्तानि

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र २१)

"पुष्पिका" परिसमाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

21

पूज्य अनुयोगाचार्य श्रीदानविजयजी गणि संशोधित: संपादितश्च

"पुष्पिका-उपांगसूत्र" [मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

"पुष्पिका" मूलं एवं वृत्ति:" नामेण

परिसमाप्त:

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'